एनटीपीसी NTPC

कोरबा KORBA

कोरबा किरण

अपने लोग, अपनी रचना

एनटीपीसी कोरबा की अर्धवार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका

वर्ष 2025-26 । अंक 2 ।
अक्टूबर 2025 से मार्च 2026

ऊर्जा से विकास, विकास से विश्वास

कोरबा सुपर थर्मल पावर प्लांट

एनटीपीसी में 77वें गणतंत्र दिवस का आयोजन

एनटीपीसी NTPC

कोरबा KORBA

परियोजना प्रमुख की कलम से

प्रिय साथियो,

“कोरबा किरण” के वर्ष 2025-26 के द्वितीय अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल साहित्यिक अभिव्यक्तियों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि एनटीपीसी कोरबा परिवार की सृजनात्मक चेतना, बौद्धिक ऊर्जा तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का दर्पण है।

राजभाषा हिंदी हमारे कार्य-संस्कृति की आत्मा है। यह न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि संगठनात्मक समन्वय, आत्मीयता और सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करने का प्रभावी साधन भी है। एनटीपीसी कोरबा सदैव राजभाषा हिंदी के प्रयोग, प्रसार एवं प्रोत्साहन के लिए प्रतिबद्ध रहा है तथा विभिन्न प्रशासनिक, तकनीकी एवं दैनिक कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु निरंतर प्रयासरत है।

“कोरबा किरण” का यह अंक हमारे सहकर्मियों की रचनात्मक प्रतिभा, अनुभवों, विचारों और संवेदनाओं को एक सुंदर मंच प्रदान करता है। इसमें सम्मिलित लेख, कविताएँ, एवं विविध रचनाएँ न केवल साहित्यिक अभिरुचि को समृद्ध करती हैं, बल्कि हमारे सामाजिक एवं मानवीय मूल्यों को भी अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। यह पत्रिका एनटीपीसी कोरबा की ज्ञान-विनिमय की संस्कृति को और अधिक सुदृढ़ करती है।

मुझे विश्वास है कि “कोरबा किरण” का यह अंक पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायी अनुभव प्रदान करेगा तथा हिंदी भाषा के प्रति आत्मीय जुड़ाव को और अधिक प्रगाढ़ बनाएगा। साथ ही, यह हमारे कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक अभिव्यक्तियों के माध्यम से संगठनात्मक विकास में सहभागिता हेतु प्रेरित करेगा।

मैं राजभाषा अनुभाग एवं इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों, कर्मचारियों एवं रचनाकारों को उनके सराहनीय प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। आशा है कि भविष्य में भी “कोरबा किरण” इसी प्रकार नवाचार, सृजनशीलता एवं हिंदी के संवर्धन का सशक्त माध्यम बनी रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

(किशोर चंद्र पात्र)

एनटीपीसी NTPC

कोरबा KORBA

महाप्रबंधक – प्रचालन एवं अनुरक्षण
एनटीपीसी कोरबा

शुभकामना संदेश

एनटीपीसी कोरबा परियोजना की छमाही हिन्दी गृह पत्रिका “कोरबा किरण” के वर्ष 2025-26 के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका हमारे संगठन की रचनात्मक चेतना, बौद्धिक अभिव्यक्ति तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का सशक्त परिचायक है।

किसी भी संगठन की सफलता केवल तकनीकी दक्षता एवं उत्पादन उपलब्धियों तक सीमित नहीं होती, बल्कि कर्मचारियों की सहभागिता, सकारात्मक कार्य-संस्कृति तथा प्रभावी संवाद व्यवस्था भी उसकी प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी भाषा इस संवाद को सहज, आत्मीय एवं प्रभावशाली बनाने का कार्य करती है। “कोरबा किरण” इसी उद्देश्य को सार्थक रूप से आगे बढ़ाने का एक उत्कृष्ट माध्यम है।

प्रचालन एवं अनुरक्षण जैसे तकनीकी क्षेत्रों में कार्य करते हुए अनुशासन, समन्वय, दक्षता एवं निरंतर नवाचार की आवश्यकता होती है। मुझे यह देखकर हर्ष होता है कि हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी तकनीकी दायित्वों के साथ-साथ साहित्य, संस्कृति एवं रचनात्मक गतिविधियों में भी सक्रिय सहभागिता निभा रहे हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ हमारे सहकर्मियों की सृजनात्मक प्रतिभा एवं संवेदनशील सोच को अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं।

यह पत्रिका न केवल हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करती है, बल्कि एनटीपीसी कोरबा परियोजना में सकारात्मक सोच एवं सांस्कृतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ बनाती है। मुझे विश्वास है कि “कोरबा किरण” का यह अंक पाठकों को ज्ञानवर्धक एवं चिंतनशील सामग्री प्रदान करेगा।

मैं राजभाषा अनुभाग, संपादक मंडल तथा इस अंक के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं कर्मचारियों को उनके सराहनीय प्रयासों हेतु हार्दिक बधाई एवं “कोरबा किरण’ के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ देता हूँ।

शत्रुघन

(शत्रुघन बेहेरा)

अपर महाप्रबंधक
मानव संसाधन, एनटीपीसी कोरबा

अभिप्रेरण

अत्यंत हर्ष का विषय है कि एनटीपीसी कोरबा परियोजना की छमाही हिन्दी गृह पत्रिका “कोरबा किरण” के वर्ष 2025-26 के द्वितीय अंक का प्रकाशन हो रहा है । यह पत्रिका न केवल एनटीपीसी कोरबा में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम है, बल्कि कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा, विचारशीलता एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने वाला प्रेरणादायी प्रयास भी है।

किसी भी संगठन की वास्तविक शक्ति उसके कार्मिकों में निहित होती है। कर्मचारियों की सहभागिता, सकारात्मक सोच एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति संगठनात्मक विकास को नई दिशा प्रदान करती है। “कोरबा किरण” का यह अंक हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की साहित्यिक अभिरुचि, अनुभवों एवं संवेदनाओं को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त करता है तथा एनटीपीसी कोरबा में आत्मीयता, संवाद एवं सहयोग की भावना को और अधिक सुदृढ़ बनाता है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक एवं तकनीकी युग में प्रभावी संप्रेषण का विशेष महत्व है। हिंदी भाषा सरल, सहज एवं व्यापक संवाद का माध्यम होने के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक पहचान का भी आधार है। यह प्रसन्नता का विषय है कि एनटीपीसी कोरबा में प्रशासनिक, तकनीकी एवं कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को निरंतर प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे न केवल कार्यकुशलता में वृद्धि होती है, बल्कि कर्मचारियों के बीच बेहतर समन्वय एवं सहभागिता भी विकसित होती है।

इस अंक में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ हमारे सहकर्मियों की सृजनात्मक क्षमता और सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाती हैं। 'कोरबा किरण' रचनात्मक चिंतन एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभर रही है। मुझे विश्वास है कि “कोरबा किरण” का यह अंक सभी पाठकों के लिए प्रेरणादायी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

(शशि शेखर)

एनटीपीसी NTPC

कोरबा KORBA

संपादकीय

सभी पाठकों को सादर साधुवाद,

आपके हाथों में “कोरबा किरण” का वर्ष 2025-26 का द्वितीय अंक सौंपते हुए अत्यंत प्रसन्नता एवं आत्मसंतोष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका केवल शब्दों और रचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि एनटीपीसी कोरबा परिवार की सृजनात्मक चेतना, सांस्कृतिक संवेदनशीलता तथा राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का सजीव दस्तावेज है।

राजभाषा हिंदी एनटीपीसी कोरबा में संवाद, समन्वय और आत्मीय अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम रही है। तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्यों के साथ-साथ हिंदी ने कर्मचारियों के बीच भावनात्मक जुड़ाव और सांस्कृतिक एकता को भी सुदृढ़ किया है। “कोरबा किरण” इसी भावना को आगे बढ़ाते हुए कर्मचारियों की प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने का एक विनम्र प्रयास है।

इस अंक में हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रस्तुत लेख, कविताएँ, अनुभव एवं विचार सम्मिलित किए गए हैं। इन रचनाओं में साहित्यिक अभिरुचि के साथ-साथ सामाजिक चेतना, मानवीय संवेदनाएँ, कार्य-संस्कृति एवं समकालीन विषयों की झलक भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह विविधता ही इस पत्रिका की वास्तविक शक्ति है, जो इसे ज्ञान, विचार और सृजन का सुंदर संगम बनाती है।

हम इस अंक के सफल प्रकाशन में सहयोग देने वाले सभी रचनाकारों, अधिकारियों, कर्मचारियों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। विशेष रूप से उन साथियों का अभिनंदन, जिन्होंने अपने व्यस्त कार्य-दायित्वों के बीच समय निकालकर अपनी रचनात्मक अभिव्यक्तियों से इस अंक को समृद्ध बनाया। विश्वास है कि यह अंक पाठकों को न केवल साहित्यिक आनंद प्रदान करेगा, बल्कि नई सोच, प्रेरणा एवं आत्मीय जुड़ाव का अनुभव भी कराएगा।

आपके सुझाव, विचार एवं रचनात्मक सहयोग हमारे लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेंगे। आशा है कि भविष्य में भी “कोरबा किरण” इसी प्रकार हिंदी भाषा, साहित्य एवं संगठनात्मक संस्कृति के संवर्धन में अपनी सार्थक भूमिका निभाती रहेगी।

लखन

(लखन)
कार्यपालक (राजभाषा)

संपादक मण्डल

मुख्य संरक्षक

श्री किशोर चंद्र पात्र
मुख्य महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रमुख
एनटीपीसी लिमिटेड, कोरबा

परामर्श मण्डल

श्री शत्रुघन बेहेरा
महाप्रबन्धक (प्रचालन एंड अनुरक्षण)

श्री शशि शेखर
अपर महाप्रबन्धक (मानव संसाधन)

श्री सुमीत राइबगकर
उप महाप्रबन्धक (मानव संसाधन)

श्रीमती आराधना प्रधान
प्रबंधक (मानव संसाधन)

संपादक

श्री लखन
कार्यपालक (राजभाषा)

एनटीपीसी गीत

अंधकार की घोर निशा में,
ज्योति किरण बनकर हम छाये ।
शक्ति निगम बनकर हम आये,
शक्ति निगम बनकर हम आये ।।

प्रांत-प्रांत में, नगर-नगर में,
गाँव-गाँव में, डगर-डगर में ।
भारत माता के घर-घर में,
नित अभिनव प्रकाश पहुँचाये ।।

महाशक्ति की पावन धारा,
करदे सिंचित देश हमारा ।
सदा यही संकल्प हमारा,
किरण-किरण से पुंज बनाए ।।

"कोरबा किरण" आपकी अपनी पत्रिका है। इसमें आपके एवं आपके परिवार के सदस्यों की मौलिक रचनाओं का स्वागत है। इसके अगले अंक के लिए आप तकनीकी लेख, कहानी, कविता, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण, ज्ञानवर्धक रचनाएं आदि हिंदी अनुभाग (lakhan02@ntpc.co.in) को भिजवाएं और अपनी सृजनात्मक प्रतिभा को उभरने का अवसर दें। पत्रिका को और बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों का स्वागत है।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के हैं, उनसे प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं।

एनटीपीसी कोरबा

परिचालन उत्कृष्टता में स्थापित किए नए मानदंड

विश्वसनीय ऊर्जा राष्ट्र की प्रगति

उत्कृष्ट प्रदर्शन • विश्वसनीय संचालन • राष्ट्र के लिए समर्पण

प्रमुख उपलब्धियों

1 87.71% पीएलएफ (PLF)
वित्तीय वर्ष 2025–26 में सभी एनटीपीसी स्टेशनों में प्रथम स्थान।

2 लगातार छठे वर्ष
एनटीपीसी में सर्वाधिक पीएलएफ प्राप्त करने का गौरव।

3 राष्ट्रीय स्तर पर पहचान
ऑल इंडिया पीएलएफ रैंकिंग में देश के शीर्ष 10 बिजली संयंत्रों में शामिल एकमात्र एनटीपीसी स्टेशन।

4 सर्वाधिक परिचालन आय
वित्तीय वर्ष 2025–26 में सभी एनटीपीसी कोयला आधारित स्टेशनों में सर्वाधिक परिचालन आय अर्जित की।

5 यूनिट-7 (500 मेगावाट)
ने **455 दिनों** तक लगातार संचालन कर एनटीपीसी के 500 मेगावाट यूनिट्स में तीसरा सबसे लंबा संचालन रिकॉर्ड बनाया।

6 यूनिट-1 (200 मेगावाट)
ने **420 दिनों** का लगातार संचालन कर 200/210 मेगावाट श्रेणी में नया कीर्तिमान स्थापित किया।

7 स्टेज-I यूनिट्स का उत्कृष्ट प्रदर्शन
स्टेज-I की तीनों यूनिट्स, एनटीपीसी की 200/210 मेगावाट श्रेणी के शीर्ष 5 सबसे लंबे समय तक चलने वाले यूनिट्स में शामिल।

8 उत्कृष्टता की सशक्त संस्कृति
प्रिवेंटिव मेंटेनेंस, कंडीशन मॉनिटरिंग, ईंधन प्रबंधन और प्रक्रिया अनुकूलन से उच्च विश्वसनीयता और दक्ष संचालन सुनिश्चित।

9 राष्ट्र को सशक्त बनाना
एनटीपीसी कोरबा, देश की ऊर्जा प्रणाली को निरंतर मजबूती प्रदान कर रहा है और विश्वसनीय, सतत एवं गुणवत्तापूर्ण विद्युत उत्पादन के नए मानदंड स्थापित कर रहा है।

विश्वास
मूल्य
उत्कृष्टता

एक नज़र में

पीएलएफ	एनटीपीसी रैंकिंग	लगातार सर्वाच्च पीएलएफ	यूनिट-7 (500 मेगावाट)	यूनिट-1 (200 मेगावाट)	राष्ट्रीय पहचान	परिचालन आय
87.71%	प्रथम	6 वर्ष	455 दिन	420 दिन	ऑल इंडिया शीर्ष 10 में स्थान	एनटीपीसी कोयला आधारित स्टेशनों में सर्वाधिक

निरंतर उत्कृष्टता, विश्वसनीय ऊर्जा और राष्ट्र निर्माण के प्रति समर्पण— एनटीपीसी कोरबा की पहचान।

अनुक्रमणिका

विषय | पृष्ट

77वें गणतंत्र दिवस समाहरोह की झलकियाँ
परियोजना प्रमुख संदेश
महाप्रबंधक शुभकामना संदेश
अपर महाप्रबंधक (मा. सं.) अभिप्रेरण
संपादकीय
एनटीपीसी गीत

हिंदी गतिविधियां

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन 01-02
हिंदी तिमाही बैठके 03
हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन 04
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोरबा का संचालन 05

एनटीपीसी कोरबा गतिविधियां

दीपावली मिलन समाहरोह 11
यूनिट #7 का 365 दिन निर्बाध संचालन 12
सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 13
राष्ट्रीय एकता दिवस 14
विश्व गुणवत्ता दिवस , 55वां राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह 15
रक्तदान शिविर का आयोजन, अग्निशमन मोकड्रिल 16
नववर्ष 2026 का स्वागत 17-18
नेताजी सुभाष चंद्र बोष जयंती समाहरोह 19
धरोहर - भव्य शास्त्रीय संगीत संध्या 20-22
77वां गणतंत्र दिवस समाहरोह 22-23
पाली महोत्सव 2026 में प्रतिभागिता 24
होली मिलन समाहरोह 25
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 26

विषय | पृष्ट

कविता

जीवन को देती खास अर्थ 28
एनटीपीसी यात्रा 29
कोरबा लौ 30
खेल - खेल में 31
आज का दौर 32
गर्मी की छुट्टी 33
नयी सुबह 34

लेख

एफजीडी (फ्ल्यू गैस डीसल्फराइजेशन) 35
फ्लाई ऐश से भविष्य निर्माण 36
गर्मियों की छुट्टियाँ: मुट्ठी भर यादें 37-38
जार-जुआरी-बारजा-राह बारे सुनार 37-42
अक्ती तिहार (अक्षय तृतीया) 43

स्थायी स्तंभ

भाषा की समझ 07
राजभाषा यात्रा 08-10
ऊर्जा: ऊर्जा से विकास, विकास से विश्वास 44
अंक के साहित्यकार 45-47
हिन्दी व्याकरण 48
प्रेरक प्रसंग 49
हिन्दी अँग्रेजी टिप्पणियाँ 50-53
शब्दावली ज्ञान 54-55
हिंदी साहित्य खोज प्रतियोगिता 58

अन्य

रचना संगम 56
एनटीपीसी कोरबा सुर्खियों में 57

एनटीपीसी कोरबा में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन।

एनटीपीसी कोरबा में दिनांक 13 मार्च 2026 को राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार तथा कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों के स्वस्थ मनोरंजन के उद्देश्य से अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर देश भर के राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर के ख्यातिप्राप्त कवियों ने अपनी प्रभावशाली प्रस्तुतियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में एनटीपीसी कोरबा के परियोजना प्रमुख श्री किशोर चंद्र पात्र उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ परियोजना प्रमुख महोदय द्वारा दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा सभी आमंत्रित कवियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया तथा हिंदी भाषा के संवर्धन में ऐसे आयोजनों की महत्ता पर प्रकाश डाला गया।

कवि सम्मेलन का संचालन प्रसिद्ध हास्य एवं व्यंग्य कवि श्री शंभू शिखर (बिहार) ने अपने चिर-परिचित हास्यपूर्ण अंदाज में किया। मंच पर उनके साथ प्रसिद्ध हास्य व छंद शास्त्र के जानकार कवि डॉ अनिल चौबे (बनारस), श्री मीर अली मीर (रायपुर), छत्तीसगढ़ के गीति काव्य के प्रखर स्वर, तथा शृंगार एवं हास्य काव्य की युवा कवयित्री सुश्री पद्मिनी शर्मा (दिल्ली) उपस्थित रहीं।

कवि सम्मेलन का मुख्य आकर्षण देश-विदेश में अपनी हास्य कविताओं के लिए विख्यात कवि श्री अरुण जैमिनी रहे, जिन्होंने अपने अनोखे और मजेदार अंदाज से श्रोताओं को खूब गुदगुदाया और तालियों की गूंज से सभागार बार-बार मुखरित हो उठा।

कवियों ने अपनी कविताओं के माध्यम से जीवन, समाज और समकालीन परिस्थितियों पर सार्थक व मनोरंजक अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत कीं। इस दौरान कवयित्री पद्मिनी शर्मा की पंक्तियाँ –

"लगती है मगर राज़ नहीं होती है,
ज़िंदगी सिर्फ मधुर साज़ नहीं होती है,
बीत जाती है अचानक, तो पता चलता है,
उम्र के पांव की आवाज़ नहीं होती है।"
ने श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।

डॉ. अनिल चौबे (बनारस)

छत्तीसगढ़ की मिट्टी और संस्कृति को स्वर देते हुए श्री मीर अली मीर ने अपनी छत्तीसगढ़ी कविता की पंक्तियों से श्रोताओं का मन मोह लिया –

"छत्तीसगढ़ी पावन जल माटी,
चुपड़े बर खलबल-खलबल आथे न,
रमई पाट म जाके दिखावें गंगा,
इहों-इन्हों एमा थे नं..."

श्री शंभू शिखर

वहीं डॉ. अनिल चौबे (बनारस) की व्यंग्यपूर्ण पंक्तियों –

"सियासत आ गयी होती तो रहबर हो गये होते,
ज़रा सी चम्चई आती तो घर-वर हो गये होते..."
ने हास्य व व्यंग्य के माध्यम से खूब ठहाके बटोरे।

श्री मीर अली मीर

कवि अरुण जैमिनी की पंक्तियाँ –

"इक्कीसवीं सदी में ढूंढते रह जाओगे
भरत सा भाई, लक्ष्मण सा अनुयायी..."
ने भारतीय संस्कारों की स्मृति को जीवंत किया।

वहीं मंच संचालक शंभू शिखर की प्रेरणादायी पंक्तियाँ –

"ज़िन्दगी है तो दिल लगा के जियो,
सारे दुख-दर्द को भुला के जियो..."
ने कार्यक्रम को सकारात्मक संदेश के साथ आगे बढ़ाया।

श्रीमती पदम्नी शर्मा

इस भव्य कवि सम्मेलन का सफल आयोजन श्री किशोर चंद्र पात्र, परियोजना प्रमुख एनटीपीसी कोरबा की प्रेरणा व मार्गदर्शन से किया गया। यह आयोजन न केवल हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ, बल्कि कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों के लिए साहित्यिक और सांस्कृतिक समृद्धि का भी एक यादगार अवसर बना।

श्री अरुण जैमिनी

एनटीपीसी कोरबा में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही (जनवरी से मार्च 2026) की बैठक सम्पन्न।

दिनांक 31 मार्च 2026 को श्री किशोर चंद्र पात्र, परियोजना प्रमुख एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्षता में तिमाही (जनवरी से मार्च 2026) की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सर्वप्रथम श्री शशि शेखर, मानव संसाधन प्रमुख द्वारा अध्यक्ष महोदय व समस्त समिति सदस्यों का स्वागत किया गया व राजभाषा कार्यान्वयन समिति की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। बैठक में एनटीपीसी कोरबा परियोजना में राजभाषा हिंदी के प्रयोग पर विस्तृत चर्चा की गई तथा मानव संसाधन विभाग के राजभाषा अनुभाग द्वारा तिमाही के दौरान किए गए कार्यों से सभी उपस्थित समिति सदस्यों को अवगत कराया गया। बैठक के दौरान समिति सदस्यों द्वारा कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु बहुमूल्य विचार एवं सुझाव सांझा किए ।

समिति अध्यक्ष महोदय ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज की चर्चा से पता चलता है कि हमने प्रगति तो की है, लेकिन अभी भी सुधार की बहुत संभावनाएँ हैं। हमें मिलकर यह प्रयास करना होगा कि राजभाषा नीति के सभी प्रावधानों का पालन किया जाए एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार द्वारा निर्धारित वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के पूरे प्रयास करने चाहिए । ताकि संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण में हम पूरी तरह सफल हो सकें। उन्होने सभी विभाग प्रमुखों से आग्रह आग्रह किया कि वे अपने विभागों में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा दें और कर्मचारियों को इस दिशा में मार्गदर्शन प्रदान करें तथा अपने समोढ़न के अंत में कहा कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। इसके प्रसार में हम सभी की महत्वपूर्ण भूमिका है तथा आप सभी का सहयोग अपेक्षित है । बैठक की कार्यवाही का संचालन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य – सचिव लखन, कार्यपालक (राजभाषा) ने किया।

एनटीपीसी, कोरबा कार्यालय में हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन ।

एनटीपीसी कोरबा परियोजना में कार्मिकों को हिन्दी भाषा के प्रति अधिक जागरूक एवं हिन्दी में सरलता से कार्य करने हेतु दक्ष बनाने के उद्देश्य से दिनांक 19.12.2026 एवं 17.02.2026, 19.02.2026 को कर्मचारी विकास केंद्र के सहयोग से तीन हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं के माध्यम से कार्मिकों को हिन्दी के व्यावहरिक प्रयोग की जानकारी दी गई एवं दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित किया गया। कार्यशालाओं के दौरान प्रतिभागियों को कंप्यूटर पर हिन्दी कार्य करने, राजभाषा संबंधी प्रावधान, यूनिकोड फॉन्ट, हिन्दी ई-टूल्स से संबंधित जानकारी भी प्रदान की गई।

इसके अतिरिक्त इन कार्यशालाओं में सभी कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी से संबंधित नियमों, अधिनियमों एवं भारत सरकार, ग्रिग मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के बारे में विस्तार से अवगत कराया गया, जिससे कार्मिकों में राजभाषा के प्रति समझ और जागरूकता बढ़ी। सभी कार्यशालाएँ अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुईं और अपने निर्धारित उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त करने में सफल रहीं। कार्यशालों का संचालन श्री लखन, कार्यपालक (राजभाषा) द्वारा किया गया।

एनटीपीसी, कोरबा में "नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति" की छमाही बैठक का आयोजन

कोरबा में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन भारत सरकार गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के कार्यालय ज्ञापन क्रमांक 12024/06/2012–रा.भा. (का-2)/2443 दिनांक 22 अक्तूबर 2012 के तहत किया गया है I अक्तूबर 2012 से ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोरबा के समन्वय का दायित्व एनटीपीसी लिमिटेड कोरबा के पास है व जिसका निर्वहन सक्रिय रूप से एनटीपीसी, कोरबा द्वारा किया जा रहा है।

एनटीपीसी, कोरबा द्वारा भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित समयानुसार नराकास की छमाही बैठकों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में दिनांक 28 नवंबर 2025 को श्री विभास घटक, परियोजना प्रमुख एनटीपीसी कोरबा एवं अध्यक्ष नराकास महोदय की अध्यक्षता में नराकास, कोरबा की द्वितीय छमाही बैठक का आयोजन किया गया। उक्त बैठक में नराकास के सदस्य कार्यालयों के प्रमुख तथा हिन्दी अधिकारी/प्रभारी सम्मलित हूए व उक्त छमाही बैठक में छमाही एवं तिमाही प्रगति रिपोर्ट के समय पर प्रेषण, कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग, हिन्दी का प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा कार्यान्वयन के विभिन्न मदों पर विस्तृत चर्चा के साथ ही सदस्य कार्यालयों मे किए जा रहे राजभाषा संबंधी कार्यों की प्रगति की समीक्षा भी की गई। बैठक में नराकास अध्यक्ष महोदय द्वारा सभी सदस्य कार्यालयों से आग्रह किया कि सभी राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन को अपने अपने कार्यालय में पूरी ईमानदारी व निष्ठा के साथ करें तथा राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार हेतु किए जा रहे कार्यों की समय समय पर समीक्षा भी करें। सभी सदस्य कार्यालयों से यह भी कहा कि नराकास कोरबा के आधिकारिक व्हाट्सप्प समूह में राजभाषा हिन्दी से संबन्धित नवाचारों व विशेष कार्यों , उपलब्धियों को सांझा करें जिससे सभी कार्यालय प्रोत्साहित हो। बैठक के अंत में श्री लखन, कार्यपालक (राजभाषा) द्वारा सभी सम्मानित सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापन प्रेषित कर बैठक का समापन किया गया।

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा एनटीपीसी लिमिटेड कोरबा परियोजना का निरीक्षण

विराम चिह्न – छोटे चिह्न, बड़े अर्थ

लिखित भाषा को सुगंठित, स्पष्ट और प्रभावशाली बनाने वाले ये छोटे-छोटे चिह्न हैं – विराम चिह्न। ये वाक्यों में ठहराव, भाव और अर्थ को सही दिशा देते हैं। आइए, इन चिह्नों को समझें और भाषा को सुंदर बनाएं!

विराम चिह्न की परिभाषा, प्रकार, उदाहरण और उनका प्रयोग

याद रखें: विराम चिह्न भाषा के ट्रैफिक सिगन्ल हैं। जहां ठहरना हैं, कहां मुड़ना है और कहां रुकना है – ये हमें बताते हैं।

1. विराम चिह्न – प्रकार और प्रयोग

1. पूर्णविराम (।)	वाक्य के अंत में। उदा.– मैं स्कूल गया।
2. अर्द्धविराम (;)	भाव क्रम की दृष्टि से संबंधित वाक्यों को अलग करने हेतु। उदा.– वह पढ़ता है; वह खेलता भी है।
3. अल्पविराम (,)	वाक्य में छोटे विराम के लिए। उदा.– राम, श्याम और मोहन आए।
4. अनुपविराम (:)	किसी बात की अधिक स्पष्टता या सूची के संदर्भ। उदा.– मेरे पास तीन चीजें हैं: किताब, पेन और कॉपी।
5. प्रश्नवाचक चिह्न (?)	प्रश्नवाचक वाक्य के अंत में। उदा.– तुम कहाँ जा रहे हो?
6. विस्मयादिबोधक चिह्न (!)	आश्चर्य, खुशी, दुख आदि प्रकट करने के लिए। उदा.– वाह! तुमने यह बहुत अच्छा किया।
7. समास चिह्न (=)	समानामिक शब्दों या समरूपता दर्शाने के लिए। उदा.– राम = रघुवीर
8. समालिसूचक चिह्न (-x-, -:o:-)	पत्र, प्रस्ताव, भाषण आदि के अंत में। उदा.– धन्यवाद। -x-
9. उद्धरण चिह्न (“ ”)	किसी के कथन या विशेष शब्द दर्शाने के लिए। उदा.– उसने कहा, “मेहनत सफलता की कुंजी है।”
10. कोष्ठक चिह्न ( ), {}, []	अतिरिक्त जानकारी या स्पष्टीकरण देने के लिए। उदा.– भारत (दक्षिण एशिया का देश) विविधता के लिए प्रसिद्ध हैं।

2. इन्हें इस्तेमाल करते हुए देखिए!

- राम घर चला गया। (पूर्णविराम)
- मैं पढ़ता हूँ; वह खेलता है। (अर्द्धविराम)
- हमें दूध, फल, सब्जी और अनाज चाहिए। (अल्पविराम)
- आवश्यक वस्तुएँ चार हैं: भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा। (अनुपविराम)
- क्या तुम मेरे साथ चलोगे? (प्रश्नवाचक चिह्न)
- कमाल है! तुमने परीक्षा में प्रथम स्थान पाया। (विस्मयादिबोधक चिह्न)
- पिता = पिताजी (समास चिह्न)
- सादर, धन्यवाद। -x-
- उसने कहा, “सत्य की हमेशा जीत होती है!” (उद्धरण चिह्न)
- हमें ये रंग पसंद हैं (नीला, हरा, पीला, लाल)। (कोष्ठक चिह्न)

क्यों जरूरी हैं विराम चिह्न?

- वाक्य को स्पष्ट और सुगठित बनाते हैं।
- भावों को सही रूप से व्यक्त करते हैं।
- पढ़ने वाले को सही अर्थ समझने में मदद करते हैं।
- लेखन को प्रभावशाली और व्याकरणिक रूप से सही बनाते हैं।

सुझाव: अच्छा लेखन अभ्यास, अवलोकन और निरंतर पठन से आता हैं। लिखते रहिए, सुधारते रहिए!

“ सही विराम चिह्न आपके विचारों को आवाज देते हैं और आपकी लेखनी को प्रतिष्ठा। ”

लिखें सही,

समझें गहराई से,

बनें भाषा के सच्चे साधक!

बातों - बातों में जाने राजभाषा

"राजभाषा हिन्दी की यात्रा – स्वतंत्रता आंदोलन से डिजिटल भारत तक"

पात्र : आरव – एक युवा इंजीनियर, जो हाल ही में एनटीपीसी में नियुक्त हुआ है।
दादाजी – स्वतंत्रता आंदोलन, भारतीय संस्कृति और हिन्दी के गहरे अध्येता।

शाम का समय था। बरामदे में हल्की हवा चल रही थी। आरव अपने लैपटॉप पर कार्यालय का कोई हिन्दी नोट तैयार कर रहा था। अचानक उसने सिर उठाकर दादाजी से पूछा—

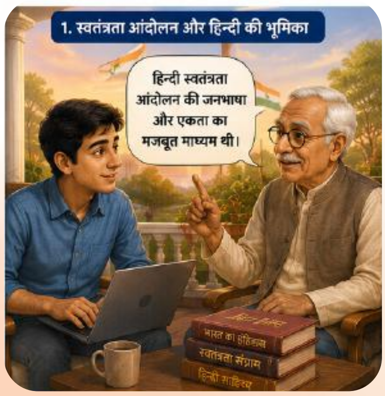

"दादाजी, एक बात बताइए... हिन्दी को आखिर 'राजभाषा' कैसे बनाया गया? क्या यह आज़ादी के बाद अचानक तय हो गया था?"

दादाजी मुस्कुराए।

"नहीं बेटा, यह केवल एक सरकारी निर्णय नहीं था, बल्कि भारत की आत्मा से जुड़ा एक लंबा आंदोलन था।"

"कैसा आंदोलन?" — आरव ने उत्सुकता से पूछा।

दादाजी ने कहना शुरू किया—

"जब भारत अंग्रेजों के अधीन था, तब शासन और प्रशासन की भाषा अंग्रेज़ी थी। आम जनता और शासन के बीच बहुत दूरी थी। उस समय महात्मा गांधी, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, काका कालेलकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जैसे अनेक नेताओं ने महसूस किया कि यदि देश को सचमुच एक सूत्र में बांधना है, तो ऐसी भाषा चाहिए जिसे देश का सामान्य नागरिक समझ सके। हिन्दी उस समय जनसंपर्क और स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख भाषा बन चुकी थी।"

"यानी हिन्दी केवल भाषा नहीं, स्वतंत्रता आंदोलन का माध्यम भी थी?" — आरव ने पूछा।

"बिल्कुल!" — दादाजी बोले —

"स्वतंत्रता सेनानियों के भाषण, जनसभाएँ, गीत, नारे—सबमें हिन्दी की गूंज थी। इसी कारण संविधान सभा में भी हिन्दी को राजभाषा बनाने पर व्यापक चर्चा हुई। अंततः 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को देवनागरी लिपि में भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इसी स्मृति में हर वर्ष 14 सितंबर को हिन्दी दिवस मनाया जाता है।"

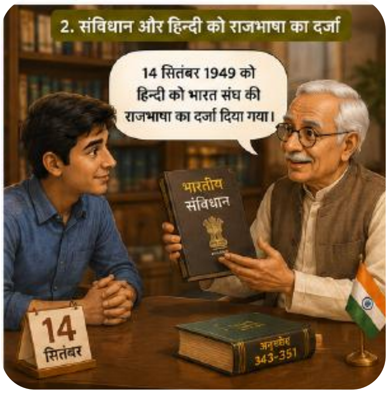

आरव अब पूरी रुचि से सुन रहा था।
"लेकिन दादाजी, फिर अंग्रेज़ी क्यों चलती रही?"
दादाजी ने समझाया—
"भारत भाषाई विविधताओं वाला देश है। इसलिए संविधान निर्माताओं ने संतुलित दृष्टिकोण अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए। हिन्दी को राजभाषा बनाया गया, परंतु प्रशासनिक सुविधा के लिए अंग्रेज़ी का सीमित उपयोग भी जारी रखा गया।"

"फिर हिन्दी के विकास के लिए क्या-क्या संस्थाएँ बनाई गईं?" — आरव ने अगला प्रश्न किया।

दादाजी बोले—
"संविधान के अनुच्छेद 344 के अंतर्गत राजभाषा आयोग का गठन किया गया। इस आयोग का उद्देश्य था—सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के उपाय सुझाना। इसके बाद संसदीय राजभाषा समिति बनी, जो विभिन्न मंत्रालयों और कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की समीक्षा करती है।"

"और राजभाषा विभाग?" — आरव ने पूछा।

"हाँ, यह बहुत महत्वपूर्ण संस्था है। गृह मंत्रालय के अंतर्गत राजभाषा विभाग केंद्र सरकार में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने का प्रमुख दायित्व निभाता है। यह विभाग विभिन्न कार्यालयों के लिए वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है, प्रशिक्षण आयोजित करता है, हिन्दी शिक्षण योजनाएँ चलाता है, अनुवाद व्यवस्था को मजबूत करता है तथा तकनीकी और डिजिटल माध्यमों से हिन्दी को प्रोत्साहित करता है।"

"मतलब अब हिन्दी केवल फाइलों तक सीमित नहीं रही?" — आरव ने मुस्कराते हुए कहा।

"बिल्कुल नहीं!" — दादाजी उत्साह से बोले —
"आज ई-ऑफिस, यूनिकोड, हिन्दी टंकण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित अनुवाद प्रणाली, पोर्टल, मोबाइल एप—सबके माध्यम से हिन्दी प्रशासन की आधुनिक भाषा बन रही है।"

आरव ने कहा—
"मैंने अपने कार्यालय में भी हिन्दी कार्यशालाएँ और प्रतियोगिताएँ देखी हैं।"

"यही तो राजभाषा नीति की सफलता है।" — दादाजी बोले।

"राजभाषा विभाग के साथ अनेक सहयोगी संस्थाएँ कार्य कर रही हैं, जैसे—

- केंद्रीय हिन्दी निदेशालय,
- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग,
- केंद्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान,
- विभिन्न नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ,
- हिंदी सलाहकार समितियाँ,
- विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियाँ आदि।

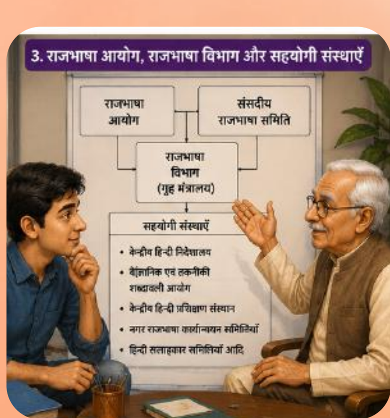

ये संस्थाएँ हिन्दी को प्रशासन, विज्ञान, बैंकिंग, तकनीक और जनसंचार की प्रभावी भाषा बनाने में योगदान दे रही हैं।"

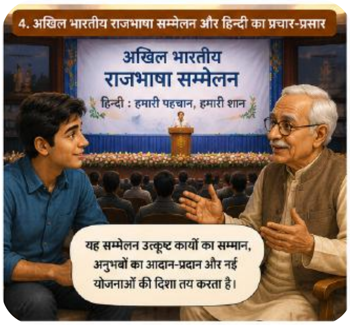

"और अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन?" — आरव ने पूछा।

दादाजी की आँखों में चमक आ गई—
"यह तो राजभाषा जगत का बड़ा उत्सव माना जाता है। इसमें देशभर के मंत्रालयों, उपक्रमों, बैंकों और संस्थानों के अधिकारी एवं हिन्दी विशेषज्ञ भाग लेते हैं। यहाँ राजभाषा कार्यान्वयन की नई योजनाओं, नवाचारों और चुनौतियों पर चर्चा होती है। उत्कृष्ट कार्य करने वाले कार्यालयों को सम्मान भी दिया जाता है। इससे स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और प्रेरणा दोनों मिलती हैं।"

आरव ने कहा—
"सच कहूँ दादाजी, अब मुझे लगता है कि हिन्दी केवल साहित्य की भाषा नहीं, बल्कि प्रशासन और प्रौद्योगिकी की भी भाषा बन चुकी है।"

दादाजी ने सहमति में सिर हिलाया—
"आज केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालय, सार्वजनिक उपक्रम, बैंक और स्वायत्त निकाय हिन्दी में कार्य करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। सरकारी वेबसाइटें द्विभाषी बनाई जा रही हैं, कार्यालय आदेश हिन्दी में जारी हो रहे हैं, कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण दिया जा रहा है और डिजिटल माध्यमों में हिन्दी का उपयोग बढ़ रहा है।"

"और एनटीपीसी?" — आरव ने गर्व से पूछा।

दादाजी मुस्कुराए—
"अरे, एनटीपीसी लिमिटेड तो राजभाषा कार्यान्वयन में अग्रणी उपक्रमों में गिना जाता है। वहाँ केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि हिन्दी को कार्यसंस्कृति का हिस्सा बनाने का प्रयास दिखाई देता है। हिन्दी कार्यशालाएँ, कवि सम्मेलन, तकनीकी संगोष्ठियाँ, गृह पत्रिकाएँ, हिन्दी पखवाड़ा, ऑनलाइन प्रतियोगिताएँ— सब अत्यंत रचनात्मक ढंग से आयोजित किए जाते हैं।"

आरव ने उत्साह से कहा—
"हमारे यहाँ भी हिन्दी में ई-नोटिंग, तकनीकी लेखन और डिजिटल सामग्री तैयार की जा रही है।"
"यही तो बदलता भारत है।" — दादाजी बोले —
"ऊर्जा उत्पादन जैसे अत्यंत तकनीकी क्षेत्र में भी हिन्दी आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ रही है। एनटीपीसी ने यह सिद्ध किया है कि आधुनिक तकनीक और हिन्दी साथ-साथ चल सकते हैं। वहाँ हिन्दी केवल भाषा नहीं, बल्कि कर्मचारी सहभागिता और सांस्कृतिक एकता का माध्यम भी है।"

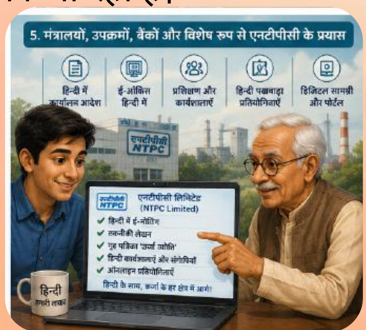

कुछ क्षणों के लिए दोनों शांत हो गए। फिर दादाजी ने धीमे स्वर में कहा—
"बेटा, हिन्दी की यात्रा अभी समाप्त नहीं हुई है। यह निरंतर आगे बढ़ रही है। स्वतंत्रता आंदोलन की जनभाषा से लेकर डिजिटल भारत की कार्यभाषा बनने तक हिन्दी ने लंबा सफर तय किया है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम इसे गर्व, सहजता और व्यवहारिकता के साथ अपनाएँ।"

आरव ने मुस्कुराते हुए अपना लैपटॉप बंद किया और बोला—
"अब समझ आया दादाजी... हिन्दी केवल हमारी भाषा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा की अभिव्यक्ति है।"

-राजभाषा अनुभाग, एनटीपीसी कोरबा

एनटीपीसी कोरबा में दीपावली मिलन : रोशनी, संगीत और एकता का उत्सव

श्री बिभास घटक, परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा, तथा श्रीमती शुभ्रा घटक, अध्यक्षा, मैत्री महिला समिति, ने अपने आवास पर भव्य दीपावली मिलन समारोह का आयोजन किया, जिसमें दीपवाली के इस प्रकाश पर्व को अत्यंत गरिमा, आत्मीयता और सामुदायिक भावना के साथ मनाया गया।

आयोजन स्थल जगमगाती रोशनी व मनमोहक सजावट से सुसज्जित था तथा एक आकर्षक सेल्फी प्वाइंट भी सभी के लिए बनाया गया, जिससे सम्पूर्ण वातावरण उत्सव और उल्लास से भर गया। कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक दीप प्रज्वलन के साथ हुई, जो अंधकार पर प्रकाश की शाश्वत विजय का प्रतीक है।

कोरबा की रंग महल अकादमी द्वारा प्रस्तुत संगीतमय कार्यक्रम ने उपस्थित अतिथियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं सदाबहार रेट्रो गीतों की मधुर प्रस्तुतियों ने संध्या को सुरमयी और यादगार बना दिया। कार्यक्रम में आयोजित मनोरंजक खेलों और क्विज़ प्रतियोगिताओं ने सभी आयु वर्ग के प्रतिभागियों को उत्साहपूर्वक जोड़े रखा तथा एनटीपीसी कोरबा परिवार की सौहार्दपूर्ण भावना और उत्साह को प्रतिबिंबित किया।

समारोह का एक प्रमुख आकर्षण भव्य आतिशबाजी प्रदर्शन रहा, जिसने रात के आकाश को उल्लास और उत्सव के रंगों से आलोकित कर दिया। इसके पश्चात आयोजित भव्य गाला डिनर में अतिथियों ने विविध स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद लिया।

जैसे-जैसे रात अपने समापन की ओर बढ़ी, जीवंत तंबोला सत्र ने वातावरण को हँसी और उमंग से भर दिया तथा आपसी खुशी और आत्मीयता से परिपूर्ण इस सुंदर संध्या का शानदार समापन किया।

एनटीपीसी कोरबा का दीपावली मिलन केवल एक उत्सव नहीं था, बल्कि यह कर्मचारियों और उनके परिवारों के बीच एकता, आनंद और साझा उत्सवी भावना का हृदयस्पर्शी संगम था।

एनटीपीसी कोरबा की यूनिट #7 ने 365 दिनों का निर्बाध संचालन पूर्ण किया — उत्कृष्टता और टीमवर्क का अद्भुत उदाहरण

एनटीपीसी कोरबा ने अपनी गौरवशाली उपलब्धियों में एक और स्वर्णिम अध्याय जोड़ते हुए यूनिट #7 के 365 दिनों के निरंतर एवं निर्बाध संचालन को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। यह उपलब्धि संयंत्र के परिचालन इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है और सतत विश्वसनीयता, तकनीकी दक्षता तथा संचालन एवं अनुरक्षण टीम के अथक समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

इस उपलब्धि का उत्सव यूनिट #7 कंट्रोल रूम में गर्व और उत्साह के साथ मनाया गया, जहाँ श्री शत्रुघ्न बेहरा, महाप्रबंधक (ओ एंड एम) , एससीई, यूसीई/डेस्क इंजीनियर तथा स्टेज-III के समर्पित सहयोगी कर्मियों ने एकत्र होकर इस विशेष अवसर को यादगार बनाया। पूरे वातावरण में संतोष और सामूहिक गौरव की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी, जो इस सफलता के पीछे टीम के समन्वय, कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता को दर्शाती थी।

इस अवसर पर एनटीपीसी कोरबा के व्यवसाय इकाई प्रमुख श्री बिभास घटक ने पूरी टीम को उनके उत्कृष्ट प्रयासों और परिचालन उत्कृष्टता के प्रति समर्पण के लिए बधाई दी। उन्होंने संचालन एवं अनुरक्षण दल, अभियंताओं तथा सहयोगी कर्मचारियों की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने पूरे वर्ष दक्षता, सुरक्षा और विश्वसनीयता के उच्चतम मानकों को बनाए रखा।

उन्होंने आगे कहा कि इस प्रकार की उपलब्धियाँ केवल एनटीपीसी कोरबा की तकनीकी क्षमता को ही नहीं दर्शातीं, बल्कि संगठन की मजबूत टीम भावना और निरंतर सुधार की संस्कृति को भी प्रतिबिंबित करती हैं। उन्होंने कहा, "ऐसी उपलब्धियाँ राष्ट्र को जिम्मेदारीपूर्वक और विश्वसनीय रूप से विद्युत उपलब्ध कराने के हमारे संकल्प को और अधिक सुदृढ़ करती हैं।"

यूनिट #7 का एक वर्ष तक सफल एवं निर्बाध संचालन एनटीपीसी कोरबा की उस गौरवशाली विरासत को पुनः स्थापित करता है, जिसके तहत यह स्टेशन प्रदर्शन, विश्वसनीयता और टीमवर्क के क्षेत्र में निरंतर नए मानक स्थापित करता रहा है।

एनटीपीसी कोरबा में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 के दौरान शपथ ग्रहण एवं वॉकाथॉन का आयोजन।

केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) के निर्देशों के अनुरूप एनटीपीसी कोरबा में "सतर्कता – हमारी साझा जिम्मेदारी" विषय के साथ 27 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाया गया। सप्ताह का शुभारंभ विकास भवन में आयोजित सत्यनिष्ठा शपथ ग्रहण समारोह से हुआ, जिसमें व्यवसाय इकाई प्रमुख श्री बिभास घटक ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को ईमानदारी और पारदर्शिता की शपथ दिलाई।

इसी क्रम में एनटीपीसी कोरबा टाउनशिप में एक जागरूकता वॉकाथॉन का आयोजन भी किया गया, जिसका नेतृत्व श्री बिभास घटक ने किया। प्रगति क्लब से सिल्वर जुबली पार्क तक आयोजित इस वॉकाथॉन में कर्मचारियों, सीआईएसएफ कर्मियों एवं यूनियन प्रतिनिधियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा नैतिक आचरण, पारदर्शिता और भ्रष्टाचार उन्मूलन का संदेश दिया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 ने यह संदेश दिया कि सत्यनिष्ठा, जवाबदेही और सतर्कता सभी की साझा जिम्मेदारी है तथा सुशासन और पारदर्शी कार्य संस्कृति की आधारशिला भी।

एनटीपीसी कोरबा में राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन

एनटीपीसी कोरबा ने 31 अक्टूबर 2025 को राष्ट्र के साथ राष्ट्रीय एकता दिवस उत्साह और जनभागीदारी के साथ मनाया इस अवसर पर "रन फॉर यूनिटी" का भी आयोजन किया गया।। सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य राष्ट्रीय एकता, अखंडता और "एक भारत, श्रेष्ठ भारत" की भावना को सुदृढ़ करना था।

कार्यक्रम का नेतृत्व श्री बिभास घटक, परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा द्वारा किया गया। इस अवसर पर कर्मचारियों, सीआईएसएफ कर्मियों एवं टाउनशिप के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक "रन फॉर यूनिटी" में भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत एकता शपथ के साथ हुई, जिसके बाद टाउनशिप परिसर में एकता दौड़ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। कर्मचारियों, परिवारों और बच्चों की सक्रिय सहभागिता ने "विविधता में एकता" की भावना को जीवंत रूप से प्रस्तुत किया।

राष्ट्रीय एकता दिवस के आयोजन ने सरदार पटेल के राष्ट्र निर्माण में अमूल्य योगदान को स्मरण करते हुए देशभक्ति, सौहार्द और सामूहिक राष्ट्रीय गौरव का संदेश दिया। इस अवसर पर एनटीपीसी कोरबा ने एकता, समावेशिता और राष्ट्र निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः दोहराया।

"राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार में हिंदी ऐसी ही भाषा है"

– लोकमान्य तिलक

एनटीपीसी कोरबा में विश्व गुणवत्ता माह 2025 का शुभारंभ।

एनटीपीसी कोरबा में 1 नवंबर 2025 को विश्व गुणवत्ता माह 2025 का उत्साहपूर्वक शुभारंभ किया गया। उद्घाटन समारोह में परियोजना प्रमुख श्री बिभास घटक ने कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गुणवत्ता मानकों को सुदृढ़ करने हेतु नवाचार और प्रौद्योगिकी आधारित दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया तथा कर्मचारियों से गुणवत्ता संबंधी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी का आह्वान किया।

इस वर्ष की वैश्विक थीम “गुणवत्ता : अलग सोच” है, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता एवं डेटा विश्लेषण जैसी आधुनिक तकनीकों के माध्यम से गुणवत्ता प्रबंधन में नए दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है। विश्व गुणवत्ता सप्ताह 10 से 14 नवंबर 2025 तक तथा विश्व गुणवत्ता दिवस 13 नवंबर 2025 को मनाया गया।

पूरे माह के दौरान एनटीपीसी कोरबा में कार्यशालाओं, क्वालिटी सर्किल गतिविधियों, संवादात्मक सत्रों एवं जागरूकता अभियानों का आयोजन किया जाएगा। इन पहलों का उद्देश्य नवाचार को बढ़ावा देना, प्रक्रियागत दक्षता में सुधार करना तथा संगठन में गुणवत्ता संस्कृति को और अधिक मजबूत बनाना है।

एनटीपीसी कोरबा ने उत्साहपूर्वक मनाया 55वाँ राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह

एनटीपीसी कोरबा ने राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के स्थापना दिवस के अवसर पर 55वाँ राष्ट्रीय सुरक्षा सप्ताह उत्साह एवं जागरूकता के साथ मनाया। इस वर्ष की थीम “सुरक्षा को सुदृढ़ करने हेतु लोगों को जोड़ें, शिक्षित करें एवं सशक्त बनाएं” रही, जिसने कार्यस्थल पर मजबूत सुरक्षा संस्कृति के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता को दर्शाया।

कार्यक्रम में मुख्य महाप्रबंधक श्री किशोर चंद्र पात्र, महाप्रबंधक (ओ एंड एम) श्री शत्रुघ्न बेहरा, सीआईएसएफ कमांडेंट श्री राजीव कुल्हारी सहित विभागाध्यक्ष, कर्मचारी एवं संविदा कर्मी उपस्थित रहे। अपने संबोधन में अधिकारियों ने सुरक्षा मानकों के पालन, संभावित खतरों की पहचान तथा सामूहिक जिम्मेदारी के महत्व पर बल दिया।

सप्ताह भर आयोजित कार्यक्रमों में सुरक्षा शपथ, टूल बॉक्स टॉक, सुरक्षा प्रश्नोत्तरी, नारा एवं चित्रकला प्रतियोगिता, निबंध लेखन, अग्निशामक यंत्र संचालन प्रशिक्षण तथा क्लोरीन रिसाव नियंत्रण अभ्यास जैसी गतिविधियाँ शामिल रहीं। अपर महाप्रबंधक (सुरक्षा) श्री एस. के. गर्ग के मार्गदर्शन में आयोजित इन कार्यक्रमों ने सुरक्षा जागरूकता, कर्मचारी सहभागिता एवं परिचालन उत्कृष्टता के प्रति एनटीपीसी कोरबा की प्रतिबद्धता को और मजबूत किया।

एनटीपीसी कोरबा में स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन

07 नवंबर 2025 को 51वें एनटीपीसी स्थापना दिवस एवं 43वें एनटीपीसी कोरबा स्थापना दिवस के अवसर पर नवजीवन अस्पताल, एनटीपीसी कोरबा में रक्तदान शिविर का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ व्यवसाय इकाई प्रमुख श्री बिभास घटक एवं मैत्री महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती शुभ्रा घटक द्वारा किया गया।

सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक सेवा की भावना से आयोजित इस शिविर में स्थानीय नागरिकों, एनटीपीसी अधिकारियों, ईटी प्रशिक्षुओं, अप्रेंटिसों तथा सीआईएसएफ कर्मियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। शिविर में कुल 121 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं अस्पताल टीम के समन्वय में आयोजित यह शिविर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम ने सेवा, संवेदनशीलता और मानवता के मूल्यों को सशक्त रूप से प्रदर्शित करते हुए "पावरिंग लाइव्स" के प्रति एनटीपीसी कोरबा की प्रतिबद्धता को पुनः अभिव्यक्त किया।

14 नवंबर 2025 को कोरबा एसटीपीपी में अग्निशमन मॉक ड्रिल का आयोजन किया गया।

आपदा प्रबंधन योजना (डीएमपी) के अंतर्गत 14 नवंबर 2025 को कोरबा एसटीपीपी के स्टेज-III स्थित एलडीओ टैंक में एक व्यापक अग्निशमन मॉक ड्रिल का सफल आयोजन किया गया। इस अभ्यास का उद्देश्य आपातकालीन तैयारी का मूल्यांकन करना, विभागों के बीच समन्वय को सुदृढ़ करना तथा अग्नि संबंधी आपात परिस्थितियों में प्रतिक्रिया तंत्र की प्रभावशीलता को परखना था।

मॉक ड्रिल में डीडीआईएचएस-कोरबा तथा एचटीपीएस–सीएसईबी, डीएसपीएम–सीएसईबी, इंडियन ऑयल, बालको एवं अडानी पावर जैसे समीपवर्ती उद्योगों के सुरक्षा प्रतिनिधियों ने पर्यवेक्षक के रूप में भाग लिया। अभ्यास के दौरान सीआईएसएफ, चिकित्सा, संचालन, अनुरक्षण, मानव संसाधन एवं सुरक्षा विभागों ने त्वरित प्रतिक्रिया, संचार तंत्र के सक्रियण, अग्निशमन उपकरणों के उपयोग तथा प्रभावी समन्वय का सफल प्रदर्शन किया।

सीजीएम (एचओपी)-कोरबा एवं महाप्रबंधक (ओ एंड एम) के मार्गदर्शन में संपन्न इस मॉक ड्रिल ने सुरक्षा, आपातकालीन तैयारी और परिचालन उत्कृष्टता के प्रति एनटीपीसी कोरबा की प्रतिबद्धता को पुनः सुदृढ़ किया।

एनटीपीसी कोरबा ने भव्यता, एकता और नव संकल्प के साथ नववर्ष 2026 का स्वागत किया

एनटीपीसी कोरबा ने आज स्टेशन परिसर में आयोजित एक रंगारंग समारोह के माध्यम से नववर्ष 2026 का अत्यंत उत्साह, आत्मीयता और आपसी एकजुटता की भावना के साथ स्वागत किया। यह आयोजन एनटीपीसी कोरबा की मजबूत सौहार्दपूर्ण संस्कृति और समावेशी कार्य परिवेश का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर उभरा।
समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में श्री बिभास घटक, परियोजना प्रमुख , एनटीपीसी कोरबा उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्री शत्रुघ्न बेहरा, महाप्रबंधक (ओ एंड एम) की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में उप कमांडेंट सीआईएसएफ, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, विभागाध्यक्षों , विभिन्न यूनियनों एवं एसोसिएशनों जैसे इंटक, बीएमएस एवं एपेक्स के प्रतिनिधियों, संविदा कर्मियों, सीआईएसएफ जवानों तथा कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की, जिससे यह आयोजन वास्तव में एक सामूहिक उत्सव बन गया।

कार्यक्रम की शुरुआत अत्यंत आत्मीय एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई, जब मानव संसाधन विभागाध्यक्ष श्री शशि शेखर ने मुख्य अतिथि श्री बिभास घटक का हार्दिक स्वागत करते हुए उन्हें सम्मान एवं शुभकामनाओं के प्रतीक स्वरूप एक स्मृति-चिह्न भेंट किया।

अवसर को और अधिक आत्मीय एवं भावनात्मक बनाते हुए श्री बिभास घटक ने सभी कर्मचारियों एवं सहयोगियों को गुलाब के फूल भेंट कर नववर्ष की शुभकामनाएँ दीं, जो आशा, कृतज्ञता और नई शुरुआत का प्रतीक था। इसके पश्चात केक काटने की औपचारिकता ने समारोह के उत्सवी माहौल को और भी उल्लासपूर्ण बना दिया।

नववर्ष के अवसर पर उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए श्री बिभास घटक ने एनटीपीसी कोरबा परिवार पर गर्व व्यक्त किया तथा सभी कर्मचारियों की निष्ठा और समर्पण के लिए हार्दिक प्रशंसा प्रकट की।

इस सुवसर पर उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि , “जैसे ही वर्ष 2026 का शुभारंभ हो रहा है, मुझे कोरबा की इस प्रतिभाशाली और समर्पित टीम को संबोधित करते हुए अत्यंत गर्व का अनुभव हो रहा है। नए वर्ष की शुरुआत सदैव विशेष होती है, क्योंकि यह हमें अपनी उपलब्धियों पर विचार करने और भविष्य के लिए नए लक्ष्य निर्धारित करने का अवसर प्रदान करती है।”
पिछले वर्ष की यात्रा का उल्लेख करते हुए परियोजना प्रमुख महोदय ने स्टेशन की सामूहिक उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और कहा कि वर्ष 2025 विकास, सीख और दृढ़ता का वर्ष रहा।

उन्होंने आगे कहा, “हमने अनेक चुनौतियों का सामना किया, किंतु हम सभी ने मिलकर उन्हें नवाचार और प्रगति के अवसरों में परिवर्तित किया। आप सभी ने हमारी सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और मैं आपके अटूट प्रयासों एवं प्रतिबद्धता के लिए हृदय से आभारी हूँ।”
कार्यक्रम के समापन की ओर बढ़ते हुए श्री घटक ने आने वाले वर्ष के लिए एनटीपीसी कोरबा की भावी दृष्टि को साझा किया तथा परिचालन उत्कृष्टता, नवाचार और सतत विकास के प्रति स्टेशन की प्रतिबद्धता को दोहराया।

उन्होंने कहा, “जैसे ही हम वर्ष 2026 में प्रवेश कर रहे हैं, हमारी दृष्टि स्पष्ट है — अपनी उपलब्धियों को और आगे बढ़ाना, नए कीर्तिमान स्थापित करना तथा राष्ट्र की ऊर्जा आवश्यकताओं में और अधिक महत्वपूर्ण योगदान देना। हम सभी मिलकर लोगों के जीवन को रोशन करते रहेंगे।”

वर्ष 1983 में स्थापित एनटीपीसी कोरबा भारत के ऊर्जा क्षेत्र का एक मजबूत स्तंभ बना हुआ है तथा निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए उद्योग जगत में नए मानदंड स्थापित करता रहा है। नववर्ष समारोह ने न केवल एक नए और संभावनाओं से भरे वर्ष का स्वागत किया, बल्कि स्टेशन की जीवंत कार्य संस्कृति, एकता और भविष्य में नई ऊँचाइयों को प्राप्त करने के सामूहिक संकल्प को भी सशक्त रूप से प्रतिबिंबित किया।

एनटीपीसी कोरबा ने पराक्रम दिवस पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की

एनटीपीसी कोरबा में 23 जनवरी 2026 को नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती के उपलक्ष्य में पराक्रम दिवस श्रद्धा एवं देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में श्री बिभास घटक व्यवसाय इकाई प्रमुख, श्री शत्रुघ्न बेहरा महाप्रबंधक (ओ एंड एम), डॉ. विनोद कोल्हटकर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, श्री राजीव कुल्हारी सीआईएसएफ कमांडेंट सहित वरिष्ठ अधिकारी, सीआईएसएफ कर्मी, यूनियन एवं एसोसिएशन प्रतिनिधि तथा कर्मचारी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर अधिकारियों एवं उपस्थित जनों ने नेताजी को पुष्पांजलि अर्पित कर भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके अद्वितीय योगदान को स्मरण किया। वक्ताओं ने नेताजी के निर्भीक नेतृत्व, आज़ाद हिंद फ़ौज के गठन तथा स्वतंत्र भारत के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के दौरान नेताजी के प्रेरणादायी विचारों और “तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा” जैसे अमर आह्वान को स्मरण करते हुए राष्ट्र सेवा, एकता और समर्पण के मूल्यों को अपनाने का संदेश दिया गया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

एनटीपीसी कोरबा ने प्रस्तुत की "धरोहर" — अन्नपूर्णा देवी की विरासत को समर्पित दिव्य भारतीय शास्त्रीय संगीत संध्या

एनटीपीसी कोरबा ने 24 जनवरी 2026 की संध्या को "धरोहर" नामक भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य संध्या के आयोजन के माध्यम से अपने सांस्कृतिक परिवेश को दिव्य सुरों और कालातीत परंपराओं के अनुपम संसार में परिवर्तित कर दिया। महान संगीत साधिका अन्नपूर्णा देवी की अमर विरासत को समर्पित यह कार्यक्रम बसंत पंचमी की पावन भावना से ओत-प्रोत था तथा भारत की समृद्ध संगीत एवं कलात्मक धरोहर को भावपूर्ण श्रद्धांजलि स्वरूप प्रस्तुत किया गया। "धरोहर" अपने नाम के अनुरूप वास्तव में एक अमूल्य सांस्कृतिक विरासत का उत्सव बनकर उभरा।

यह प्रतिष्ठित आयोजन एनटीपीसी कोरबा टाउनशिप स्थित अंबेडकर भवन में आयोजित किया गया, जिसकी शुरुआत अतिथियों एवं गणमान्य व्यक्तियों के गरिमामय स्वागत के साथ हुई। मुख्य अतिथि श्री बिभास घटक परियोजना प्रमुख एनटीपीसी कोरबा, उनकी धर्मपत्नी एवं मैत्री महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती शुभ्रा घटक तथा एनटीपीसी के वरिष्ठ अधिकारियों का आत्मीय अभिनंदन किया गया, जिसने श्रद्धा, गरिमा और सांस्कृतिक गौरव से परिपूर्ण एक विशेष संध्या का वातावरण निर्मित किया।

यह संध्या बसंत पंचमी — जो ज्ञान, संगीत और सृजनशीलता का पर्व है — की भावना के अनुरूप एक आध्यात्मिक एवं कलात्मक प्रस्तुति के रूप में विकसित हुई। विशेष रूप से चयनित कलाकारों के समूह में भारत की शास्त्रीय परंपराओं के पाँच प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दीं:

- **पं. देबप्रसाद चक्रवर्ती – सितार वादन**
- **पं. सुदीप चट्टोपाध्याय – बांसुरी वादन**
- **रूपक मित्रा – तबला वादन**
- **किशन कुमार देवांगन – हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन**
- **कल्पना साहू – कथक (शास्त्रीय नृत्य)**

कार्यक्रम की शुरुआत मनमोहक एकल प्रस्तुतियों से हुई, जिसने दर्शकों को भारतीय शास्त्रीय कला की गहराई और विविधता का अनुभव कराया। सितार की ध्यानमग्न अनुगूंज, बांसुरी की मधुर प्रवाहमयी ध्वनि, तबले की जटिल लयकारी, शास्त्रीय गायन की भावपूर्ण अभिव्यक्ति तथा कथक की सजीव मुद्राओं ने अन्नपूर्णा देवी की प्रेरणादायी विरासत को सजीव कर दिया।

जैसे-जैसे कार्यक्रम आगे बढ़ा, वातावरण एक भव्य जुगलबंदी के साथ अपने चरम पर पहुँच गया, जिसमें सभी कलाकारों ने मिलकर सुर, ताल और भाव की अद्भुत संगति प्रस्तुत की। इस सामूहिक प्रस्तुति ने संगीत और अभिव्यक्ति का ऐसा सम्मोहक वातावरण निर्मित किया जिसने दर्शकों को मंत्रमुग्ध और भावविभोर कर दिया।

कार्यक्रम के समापन पर सभी कलाकारों को पारंपरिक ढोकरा स्मृति-चिह्न एवं कोसा शॉल प्रदान कर सम्मानित किया गया, जो सम्मान और उस गहरी सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक था जिसे “धरोहर” के माध्यम से उत्सव स्वरूप प्रस्तुत किया गया।

कलाकारों के बारे में :

किशन कुमार देवांगन, छत्तीसगढ़ के राजिम से संबंध रखने वाले युवा एवं अत्यंत प्रतिभाशाली हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक हैं। उन्होंने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ में ग्वालियर घराने के पं. सतीश लक्ष्मण राव इंदुरकर के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्तमान में वे पं. कैवल्य कुमार गुरव के शिष्य हैं तथा कर्नाटक स्थित डॉ. गंगूबाई हंगल गुरुकुल में अध्ययनरत हैं। उनकी गायकी में किराना घराने की आत्मीयता, भावपूर्ण आलाप, विस्तृत तानों तथा परिष्कृत बोल-तान और सरगम का सुंदर समावेश दिखाई देता है।

कल्पना साहू, दूरदर्शन केंद्र रायपुर की बी-ग्रेड कलाकार हैं तथा उन्होंने डॉ. गुंजन तिवारी के निर्देशन में कथक का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। वे इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ की स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रा रही हैं तथा खजुराहो महोत्सव और इस्कॉन बिलासपुर द्वारा आयोजित प्रमुख सांस्कृतिक आयोजनों सहित कई प्रतिष्ठित मंचों पर अपनी प्रस्तुतियाँ दे चुकी हैं।

पं. देबप्रसाद चक्रवर्ती भारत के प्रतिष्ठित सितार वादकों में से एक हैं। उन्होंने सेनिया–माईहर घराने में पं. अजय सिन्हा राय के निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त किया तथा आगे चलकर बिष्णुपुर घराने के पं. गोकुल नाग से भी मार्गदर्शन प्राप्त किया। ध्रुपद शैली पर आधारित उनकी प्रस्तुति शैली उन्हें विशिष्ट पहचान प्रदान करती है और वे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगीत समारोहों में अपनी प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं।

पं. सुदीप चट्टोपाध्याय, पन्नालाल घोष परंपरा के अग्रणी बांसुरी वादकों में से एक हैं। वे आकाशवाणी, कोलकाता के टॉप-ग्रेड कलाकार हैं तथा वर्ष 1992 से पश्चिम बंगाल के एकमात्र आईसीसीआर-मान्यता प्राप्त शास्त्रीय बांसुरी वादक हैं। रवींद्र भारती विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त पं. चट्टोपाध्याय ने आकाशवाणी राष्ट्रीय कार्यक्रम, संगीत नाटक अकादमी, आईसीसीआर तथा प्रतिष्ठित डोवर लेन म्यूजिक कॉन्फ्रेंस सहित अनेक मंचों पर अपनी प्रस्तुतियाँ दी हैं।

रूपक मित्रा, प्रतिष्ठित तबला वादक हैं, जिन्होंने प्रारंभिक प्रशिक्षण फर्रुखाबाद घराने के श्री सजल कर्मकार से प्राप्त किया तथा बाद में बनारस घराने के महान तबला वादक पं. समर साहा के निर्देशन में साधना की। रवींद्र भारती विश्वविद्यालय से एम.फिल. उपाधि प्राप्त रूपक मित्रा आकाशवाणी, कोलकाता के बी-ग्रेड कलाकार हैं तथा भारत एवं विदेशों में व्यापक रूप से अपनी प्रस्तुतियाँ दे चुके हैं।

“धरोहर” के माध्यम से एनटीपीसी कोरबा ने एक बार फिर भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया। यह केवल एक संगीत कार्यक्रम नहीं, बल्कि परंपरा, भक्ति और कलात्मक उत्कृष्टता का आलोकमय उत्सव था — ऐसा अनुभव, जो इसे देखने वाले प्रत्येक व्यक्ति की स्मृतियों में सदैव अंकित रहेगा।

पं. सुदीप चट्टोपाध्याय

किशन कुमार देवांगन,

रूपक मित्रा

कल्पना साहू,

पं. देबप्रसाद चक्रवर्ती

एनटीपीसी कोरबा ने गर्व, देशभक्ति और उत्कृष्ट प्रदर्शन के साथ 77वाँ गणतंत्र दिवस मनाया

एनटीपीसी कोरबा ने 77वें गणतंत्र दिवस को "स्वतंत्रता का मंत्र – वंदे मातरम्" तथा "समृद्धि का मंत्र – आत्मनिर्भर भारत" विषयों के साथ अत्यंत उत्साह और प्रेरणादायी देशभक्ति की भावना के साथ मनाया। यह समारोह राष्ट्रीय गौरव, सांस्कृतिक समृद्धि तथा संगठन के उत्कृष्ट प्रदर्शन का जीवंत संगम रहा।

कार्यक्रम की शुरुआत अत्यंत भावपूर्ण वातावरण में हुई, जब टाइनी कॉटेज के नन्हे-मुन्ने बच्चों ने मुख्य अतिथि श्री बिभास घटक, व्यवसाय इकाई प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा, तथा श्रीमती शुभ्रा घटक, अध्यक्षा, मैत्री महिला समिति, का गुलाब की कलियों से स्वागत किया। श्री घटक ने जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट के बीच राष्ट्रीय ध्वज फहराया, जिसके पश्चात राष्ट्रगान की मधुर प्रस्तुति हुई तथा "वंदे मातरम्" के स्वर पूरे वातावरण में देशभक्ति का उत्साह भर गए। तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने सीआईएसएफ कर्मियों के साथ औपचारिक परेड का निरीक्षण किया।

परेड अनुशासन, एकता और युवा ऊर्जा का शानदार प्रदर्शन रही, जिसमें सीआईएसएफ (सुरक्षा एवं अग्निशमन शाखा), एनसीसी तथा दिल्ली पब्लिक स्कूल, केंद्रीय विद्यालय, सरस्वती शिशु मंदिर और शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों ने गर्व और सटीकता के साथ मार्च पास्ट प्रस्तुत किया।

अपने संबोधन में श्री बिभास घटक ने भारत के स्वतंत्रता सेनानियों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की तथा सभी को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने वर्ष 1983 में स्थापना के बाद से एनटीपीसी कोरबा की यात्रा को राष्ट्र के विद्युत क्षेत्र के एक मजबूत स्तंभ तथा विश्वसनीयता एवं नवाचार के प्रतीक के रूप में रेखांकित किया।

उन्होंने कहा, "एनटीपीसी कोरबा ने 86.7% का उच्चतम पीएलएफ दर्ज किया, यूनिट-7 ने लगातार 455 दिनों के उत्कृष्ट संचालन को पूरा करते हुए एनटीपीसी के इतिहास में तीसरी सबसे लंबी अवधि तक चलने वाली 500 मेगावाट इकाई का गौरव प्राप्त किया, तथा हमारी छह इकाइयाँ वर्तमान में एनटीपीसी बेड़े की सबसे लंबी अवधि तक संचालित शीर्ष दस इकाइयों में शामिल हैं।" उन्होंने सीएसआर पहलों, कर्मचारी विकास केंद्र, अस्पताल तथा बिजनेस एक्सीलेंस टीमों के उत्कृष्ट योगदान की सराहना की तथा सभी विभागों को उनकी एकता, अनुशासन और निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए धन्यवाद दिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने समारोह में रंग और उल्लास का संचार किया। दिल्ली पब्लिक स्कूल, केंद्रीय विद्यालय, सरस्वती शिशु मंदिर तथा बाल भवन के विद्यार्थियों ने मनमोहक देशभक्ति समूह नृत्य प्रस्तुत कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सीआईएसएफ अग्निशमन शाखा द्वारा प्रस्तुत तिरंगा प्रेशर फोम स्प्रे प्रदर्शन कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण रहा, जिसने पेशेवर उत्कृष्टता और देशभक्ति की भावना का शानदार प्रदर्शन किया।

विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कर्मचारियों को मेरिटोरियस अवार्ड्स तथा अन्य सम्मानों से सम्मानित किया गया, जिसने एनटीपीसी कोरबा की प्रदर्शन और उत्कृष्टता की संस्कृति को और सुदृढ़ किया।

उत्सव का उत्साह एनटीपीसी कर्मचारियों और सीआईएसएफ कर्मियों के बीच आयोजित रस्साकशी प्रतियोगिता के साथ आगे बढ़ा, जिसने आपसी सौहार्द, टीम भावना और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का प्रतीकात्मक प्रदर्शन किया। उत्साहवर्धन, हँसी और खेल भावना से परिपूर्ण इस आयोजन का समापन इसी रोचक प्रतियोगिता के साथ अत्यंत आनंदमय वातावरण में हुआ, जिसने सभी के मन में एकता और उत्सव की अविस्मरणीय स्मृतियाँ छोड़ दीं।

दृश्य वैभव और उत्सवपूर्ण वातावरण को और आकर्षक बनाने के लिए भारत की विविध नृत्य शैलियों, छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत तथा जीवंत देशभक्ति विषयों को प्रदर्शित करता हुआ विशेष रूप से तैयार किया गया सेल्फी प्वाइंट मुख्य आकर्षण के रूप में उभरा। इसने कर्मचारियों, उनके परिवारों और बच्चों की उत्साहपूर्ण भागीदारी को आकर्षित किया तथा एनटीपीसी कोरबा में आयोजित 77वें गणतंत्र दिवस समारोह की भावना को अत्यंत सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया।

इस अवसर पर श्री शत्रुघ्न बेहरा, महाप्रबंधक (ओ एंड एम), डॉ. विनोद कोल्हटकर, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, श्री शशि शेखर, विभागाध्यक्ष (मानव संसाधन) सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी, यूनियन प्रतिनिधि तथा मैत्री महिला समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

यह समारोह एनटीपीसी कोरबा की समृद्ध विरासत, राष्ट्र निर्माण के प्रति उसकी प्रतिबद्धता तथा करोड़ों लोगों के जीवन को रोशन करने के उसके सतत मिशन का सुंदर प्रतिबिंब रहा।

एनटीपीसी कोरबा ने पाली महोत्सव 2026 में सामुदायिक विकास पहलों की प्रभावशाली झलक प्रस्तुत की

महाशिवरात्रि के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय पाली महोत्सव 2026 में एनटीपीसी कोरबा ने आकर्षक सीएसआर प्रदर्शनी स्टॉल स्थापित कर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। जिला प्रशासन के निर्देशानुसार लगाए गए इस स्टॉल में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सुरक्षा एवं सामुदायिक विकास से जुड़ी एनटीपीसी की विभिन्न सामाजिक पहलों को प्रदर्शित किया गया, जिसने बड़ी संख्या में आगंतुकों का ध्यान आकर्षित किया।

16 फरवरी 2026 को आयोजित कार्यक्रम के दौरान छत्तीसगढ़ शासन के उद्योग, वाणिज्य एवं श्रम मंत्री श्री लखन लाल देवांगन, सांसद श्रीमती ज्योत्सना महंत, विधायकगण, कलेक्टर श्री कुणाल दुदावत तथा पुलिस अधीक्षक श्री सिद्धार्थ तिवारी सहित कई जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों ने एनटीपीसी पवेलियन का अवलोकन किया। गणमान्य अतिथियों ने क्षेत्र के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में एनटीपीसी के योगदान की सराहना की।

स्टॉल पर उप प्रबंधक (सीएसआर) श्री वीरेंद्र कुमार देशमुख, अभियंता (सुरक्षा) श्री उमेश दहरिया तथा सीएसआर अधिकारी श्री रामचरण बेन ने आगंतुकों को विभिन्न सीएसआर गतिविधियों की जानकारी दी। पाली महोत्सव में सहभागिता के माध्यम से एनटीपीसी कोरबा ने पुनः यह संदेश दिया कि वह केवल विद्युत उत्पादन ही नहीं, बल्कि सामुदायिक विकास और जनकल्याण के प्रति भी समान रूप से प्रतिबद्ध है।

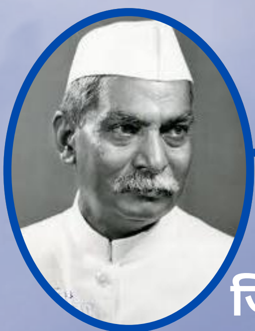

"हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया"

– डॉ. राजेंद्र प्रसाद।

रंगों की खुशियाँ : होली मिलन समाहरोह ने एनटीपीसी कोरबा परिवार को एक सूत्र में बांधा।

दिनांक 04 मार्च 2026 को एनटीपीसी कोरबा में परियोजना प्रमुख आवास पर होली का पर्व बड़े उत्साह और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस रंगारंग आयोजन में कर्मचारियों, उनके परिवारों एवं टाउनशिप के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर आपसी भाईचारे, खुशी और सामुदायिक एकता का संदेश दिया।

सुंदर सजावट, रंग-बिरंगे गुलाल और पारंपरिक होली गीतों ने पूरे वातावरण को उत्सवमय बना दिया। इस अवसर पर श्री किशोर चंद्र पात्र, परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी कोरबा द्वारा उपस्थित सभी कर्मचारियों व उनके परिवार जनों शुभकामनाएँ दीं तथा प्रतिभागियों ने भी एक-दूसरे को रंग लगाकर संगीत और नृत्य के साथ उत्सव का आनंद लिया। बच्चों की उत्साहपूर्ण सहभागिता ने आयोजन को और भी जीवंत बना दिया।

यह आयोजन कर्मचारियों एवं उनके परिवारों को आपसी मेलजोल और सौहार्द बढ़ाने का उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है, जो एनटीपीसी की एकता और समावेशिता की संस्कृति को दर्शाता है। स्वादिष्ट अल्पाहार एवं पारंपरिक मिठाइयों के साथ संपन्न इस होली उत्सव ने सभी के लिए सुखद स्मृतियाँ छोड़ीं तथा यह संदेश दिया कि त्योहार लोगों को जोड़ने और खुशियाँ बाँटने का सुंदर माध्यम हैं।

एनटीपीसी कोरबा में महिला दिवस समारोह : नारी शक्ति और उत्साह को समर्पित एक सम्मानपूर्ण आयोजन

एनटीपीसी कोरबा ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस को अत्यंत उत्साह और आत्मीयता के साथ मनाते हुए अपनी महिला कर्मचारियों के अमूल्य योगदान का सम्मान किया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के कर्मचारी एक उत्साहपूर्ण वातावरण में एकत्रित हुए, जहाँ प्रशंसा, उल्लास और आपसी सौहार्द की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

कार्यक्रम की शुरुआत परियोजना प्रमुख श्री किशोर चंद्र पात्र के प्रेरणादायी संबोधन से हुई, जिसमें उन्होंने सभी महिला कर्मचारियों को हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। अपने संबोधन में उन्होंने महिलाओं की निष्ठा, दृढ़ता और संगठन को आगे बढ़ाने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना की। उन्होंने एक समावेशी और सहयोगात्मक कार्यस्थल के निर्माण के महत्व पर बल दिया, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति विकास और सफलता प्राप्त कर सके।

कार्यक्रम का विशेष आकर्षण केक काटने की औपचारिकता रही, जो महिला कार्यबल के प्रति एकता, उत्सव और सम्मान का प्रतीक थी। इस अवसर पर उपस्थित सभी लोगों ने उत्साह और मुस्कान के साथ इस क्षण को यादगार बनाया, जिससे पूरे आयोजन में उत्सवी माहौल और अधिक प्रफुल्लित हो उठा।

दिनभर विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों, खेलों और संवादात्मक सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। मैत्रीपूर्ण प्रतियोगिताओं के दौरान हँसी और उमंग से पूरा वातावरण गूंज उठा तथा सहकर्मियों के बीच आपसी जुड़ाव और सौहार्द और भी मजबूत हुआ।

समारोह का समापन स्वादिष्ट दोपहर भोज के साथ हुआ, जहाँ कर्मचारियों ने आपसी संवाद और आनंदमय क्षणों को साझा करते हुए टीम भावना को और सुदृढ़ किया।

एनटीपीसी कोरबा में आयोजित महिला दिवस समारोह केवल एक आयोजन नहीं था, बल्कि यह संगठन की महिला कर्मचारियों की शक्ति, समर्पण और योगदान के प्रति एक भावपूर्ण सम्मान था — जिसने इस दिन को वास्तव में यादगार बना दिया।

श्री किशोर चंद्र पात्र एनटीपीसी कोरबा के परियोजना प्रमुख नियुक्त

एनटीपीसी लिमिटेड ने श्री किशोर चंद्र पात्र जी को एनटीपीसी कोरबा (2600 मेगावाट) का परियोजना प्रमुख नियुक्त किया है। उन्होंने 4 फरवरी 2026 को कार्यभार ग्रहण किया। पावर प्लांट संचालन, अनुरक्षण एवं परियोजना प्रबंधन के क्षेत्र में उन्हें 35 वर्षों से अधिक का समृद्ध अनुभव प्राप्त है।

1989 में कार्यपालक प्रशिक्षु (यांत्रिक अभियांत्रिकी) के रूप में एनटीपीसी से जुड़ने वाले श्री पात्र ने फरक्का, तालचर कानीहा, एनबीपीपीएल, ईआर-II मुख्यालय तथा वल्लूर सहित कई महत्वपूर्ण इकाइयों में नेतृत्वकारी दायित्व निभाए हैं।

यूसीई बुरला के पूर्व छात्र श्री पात्र अपनी तकनीकी विशेषज्ञता, जन-केंद्रित नेतृत्व शैली तथा सुरक्षा, सततता और उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते हैं। परियोजना प्रमुख महोदय के दूरदर्शी नेतृत्व, कुशल मार्गदर्शन एवं प्रेरणादायी दिशा-निर्देशन में एनटीपीसी कोरबा अपनी उत्कृष्ट प्रचालन उपलब्धियों की समृद्ध विरासत को निरंतर आगे बढ़ाते हुए नए कीर्तिमान स्थापित करेगा तथा संगठनात्मक उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा।

श्री के.सी. जैन, प्रथम परियोजना प्रमुख, कोरबा को श्रद्धा सुमन अर्पित करते श्री किशोर चंद्र पात्र, परियोजना प्रमुख।

परियोजना प्रमुख महोदय का स्वागत करते श्री शत्रुघन बेहेरा, महाप्रबंधक (प्रचा. एवं अनु.)।

कार्यभार ग्रहण करते परियोजना प्रमुख श्री किशोर चंद्र पात्र एवं उनके साथ श्री शत्रुघन बेहेरा, महाप्रबंधक (प्रचा. एवं अनु.)।

परियोजना प्रमुख महोदय का स्वागत करते सीआईएसएफ़ (CISF), कोरबा ईकाई के पदाधिकारीगण।

एनटीपीसी कोरबा के महाप्रबंधक एवं विभिन्न विभागाध्यक्षों से विचार-विमर्श करते श्री किशोर चंद्र पात्र, परियोजना प्रमुख कोरबा।

कार्यभार ग्रहण करने से पहले 'पूर्व परियोजना प्रमुख : पथप्रदर्शक' स्थल पर प्रेरणा प्राप्त करते हुए वर्तमान परियोजना प्रमुख श्री पात्र तथा साथ में एनटीपीसी कोरबा के पदाधिकारीगण।

माननीय श्री लखन लाल देवांगन,वाणिज्य, उद्योग,आबकारी,श्रम मंत्री, छ.ग. शासन से भेंट एव मुलाक़ात करते हुए श्री किशोर चंद्र पात्र , परियोजना प्रमुख, कोरबा ।

श्री कुणाल दुदावत, कलेक्टर एव जिला दंडाधिकारी, कोरबा, छ.ग. शासन से भेंट एव मुलाक़ात करते हुए श्री किशोर चंद्र पात्र , परियोजना प्रमुख, कोरबा ।

जीवन को देती एक खास अर्थ

घोर तम छाये जब नभ पे
बदलो से झाँकती सूर्य की किरणे
पड़ती घास पर ढ़की नम ओसों से
जीवन को देती एक खास अर्थ -------
गिरि की उच्च चोटी
बर्फ की ओढ़ी श्वेत कम्बल
ये नैसर्गिक छटा
जीवन को देती एक खास अर्थ ------
सगरो से लहरें
अपने को मिलाती मौजो से
टकराती दृढ चट्टानों
जीवन को देती एक खास अर्थ --------
जंगलो में कुंजर का मस्त होना
खग का कलरव
मृग का द्रुत गति से छिप जाना
जीवन को देती एक खास अर्थ ----

पीठ पे लटका झोला
भरा किताबो कॉपी से
सरसों तेल से चुपड़ा केश और माथा
गांव की सकरी गलियों से
नैना भरे सपनों से
कुछ खास करे अपनों के लिए
गुरु को शीश नवाते
पाठशाला को जाते बच्चे
जीवन को देती एक खास अर्थ -----
नौनिहालों को सीने से लगाये
श्रम से पसीना बहाये
नारी कहलाये
लाज बचाये
रोजी रोटी के लिए गांव घर छोड़
शहर पहुंच जाये
जीवन को देती एक खास अर्थ

राज कुमार
उप महाप्रबन्धक (एमजीआर)

एनटीपीसी यात्रा

शून्य से चलकर सपनों ने, प्रकाश का रूप लिया,
अंधकार के उस युग से, उजियारे ने स्वरूप लिया।
परिश्रम की हर बूंद ने, इतिहास नया रच डाला,
शून्य से अस्सी गीगावाट तक, भारत ने दीप जला डाला।
हर टरबाइन की गूंज में, कर्मनिष्ठा का गीत है,
हर इक इकाई की धड़कन में, श्रम का सच्चा प्रीत है।
रात-दिवस का भेद मिटा, लक्ष्य बना उजियारा,
हर चेहरे पर झलकता है, समर्पण का सितारा।
तापीय से आगे बढ़कर, जलविद्युत ने साथ दिया,
सूर्य किरणों, पवन वेग ने, नव ऊर्जा का पथ लिया।
कोयला खनन की गहराई में, आत्मनिर्भरता जागी,
ऊर्जा के हर आयाम में, प्रगति की ज्योति लागी।
विद्युत व्यापार के पथ पर, विस्तार ने पंख पसारे,
नवाचार और सहयोग से, लक्ष्य हुए और भी न्यारे।
सिर्फ उत्पादन ही नहीं, संस्कृति भी महान बनी,
मानवता और अनुशासन से, हर बाधा आसान बनी।
आज शिखर पर खड़ा जो है, कल का एक सपना था,
हर कर्मयोगी का समर्पण, इस यात्रा का अपना था।
आगे भी यह ज्योति जले, और ऊँचाइयाँ छू जाए,
शून्य से शुरू हुई गाथा, अनंत तक जगमगाए।

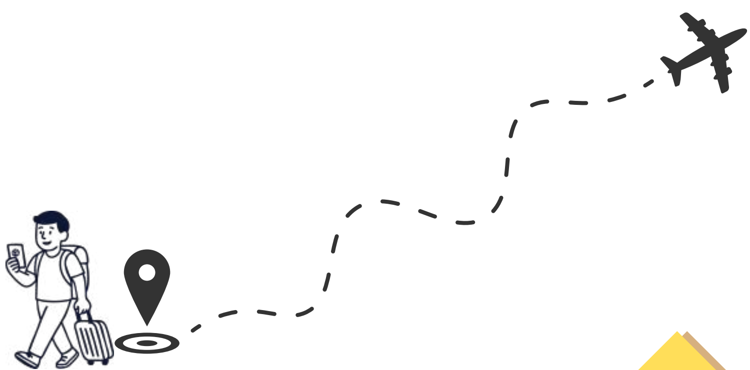

आलोक दूबे
उपमहाप्रबंधक (राख़ निष्पादन प्रबंधन)

"कोरबा की लौ"

चिमनियों से उठता धुआँ,
फिर भी सूरज से कम नहीं रोशन है कोरबा।
यहाँ पसीना बहता है,
तो बिजली बनकर पूरे देश को जगमगाता है।

हर सुबह जब शिफ्ट बदलती है,
तो दिल में एक गर्व जागता है।
एनटीपीसी की इस मिट्टी में,
मेरा खून भी मिला हुआ है।

मेरे बच्चे स्कूल जाते हैं,
उनके बस्ते में किताबें नहीं,
उनके बस्ते में सपने भी होते हैं—
"पापा की पावर प्लांट" वाली कहानी।

यहाँ कोयला काला है,
पर इरादे चमकदार हैं।
हर टरबाइन की ध्वनि में,
माँ की लोरी और बाप की मेहनत गूँजती है।

कोरबा किरण, तू जलती रहना,
चाहे कितनी भी रात गहरी हो।
तेरी हर किरण में बसता है,
एक कर्मठ परिवार का गौरव, एक सपना, एक उम्मीद।

जब कोई पूछे— "तुम कहाँ से हो?"
तो सीना चौड़ा करके कहूँगा,
"कोरबा से...
जहाँ अंधेरा कोयला भी,
रोशनी का खजाना बन जाता है।"

लेखक: सोहन सिंह
जूनियर इंजीनियर (प्रचा. एवं अनु.)

खेल–खेल में

बड़े अरमानों से, एक माँ ने दिया बिटिया को जन्म।
नौ माह कोख में रखकर,माँ का ही हुआ पुनर्जन्म।
स्व-पीड़ा वो गई बिल्कुल भूल,
जब बाहों में बिटिया रही झूल।
नए-नए ख़्वाब वो रोज़ सजाती,
हर दुआ में उसे चिरंजीवी बनाती।
कुछ निवाले खुद खाती वो माँ कम,
कहीं तेज़ रफ़्तार उसकी लाड़ो हो न जाए मध्यम।
जब घर की आमदनी का आधा हिस्सा
बनने लगा स्कूल-किताबों का क़िस्सा,
तब माँ ने भी घर से बाहर रखा कदम,
चार पैसों की ख़ातिर रहने लगी बाहर हरदम।
अब न माँ, न पिता घर में परिंदा मुताहिल,
बेटी के हाथ में आ गया खंज़्जर मोबाइल।
माँ-बाप कमाते रहे बेटी के सुनहरे कल के लिए,
और बेटी किताबें तज मोबाइल की दीवानी होती गई धीरे-धीरे।
पहले चित्र, फिर चल-चित्र, फिर सब कुछ हुआ विचित्र।
एक मिला अनोखा खेल— जहाँ मिले नए मित्र।
फिर क्या... बेटी को एक नई राह मिल गई,
और माँ-बाप को अनजाने में एक “आह” मिल गई।
वो कमाने में रहे व्यस्त,
बेटी खेलने में मस्त।
माँ-बाप काम में उलझे,
बेटी टास्क में उलझे।
एक मंज़िल—ज़िंदगी बुलाती रही,
दूसरी मंज़िल—ज़िंदगी बुझाती रही।
माँ-बाप को हुआ न आभास,
कि बेटी जा पहुँची टास्क नंबर उनचास।
और अगला लक्ष्य—टास्क पचास।

पचास...मतलब आख़िरी कदम,
जो हृदय चीर छीन लेगा तुम्हारा दम।
तुम्हारे “कलेजे के टुकड़े” कर देगा हज़ार,
तुम्हारी जान जाएगी बिन हथियार।
न डर लंबी मीनारों से, न ऊँची दीवारों से—
कूद जाएंगे खेल–खेल के इशारों से।
तुम्हारा लाड़, तुम्हारा मान—पड़ा है मृत ।
वो खेल–खेल में हो गई विरक्त।
आज—एक हाथ में चंद रुपइए, आँखों में टूटा सपना,
दूसरे हाथ में लहूलुहान तन
पलकों में न रुकते आँसू,बिलखते लब,
और प्रश्न करता मन—
क्या गर्भ से लेकर अर्थी तक इतनी-सी थी उसकी कहानी?
क्यों शैशव काल के बाद वो देख न पाई जवानी ?
क्या सारा दोष उसका था, या सारा दोष था हमारा?
या दोष इस परिवेश का , या तकनीकी ने उसको मारा?
एक प्रश्न मुझे झकझोरता हरपल
मौत को क्या नाम दूँ? आत्महत्या...हादसा...या फिर— क़त्ल?
निरूत्तर जरूर है ज़माना,
इसी आग के दरिया से सभी को है जाना ।
सोचो...
“अब न वो घर-घर होगा, न होगा वो परिवार।
कैसे खेल–खेल में उजड़ गया हँसता खेलता संसार।
“‘ना दो बच्चों के हाथ मे मोबाइल” यही विनती, यही चेतावनी,
ना देने दो मोबाइल को अपने प्रियो कि मुखाग्नि।

कोरल वर्मा
पत्नी - श्री रवि कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक (अनुबंध और सामग्री)

आज का दौर

सहमकर चलती हवाएं साजिशों के दौर में।
कब कहां कंकड़ निकल जाए निवाले कौर में।

उठ रहा ऐसा बवंडर तृण चले आकाश में,
सत्य वट यूं ही अडिग छल बेल है भुजपाश में,
क्यों उछलते लोभ तुम खैरात के धन मान पर
फल कहां से पुष्ट हो कीड़े लगे हों बौर में।।1।।

आंधियों के भाग्य का पकड़ा कलम विध्वंश ने,
किंतु युग निर्माणका जिम्मा लिया सच अंश ने,
बल भले कितना लगा ले छल कपट हथियार से।
रत्न तो होगें जड़ित केवल नियति के मौर में।।2।।

पढ़ सको तो मर्म पढ़ लो कर्म के सिद्धांत को,
काल ने छोड़ा नहीं है आजतक आक्रांत को,
जब निकलता है समय दल बल सहित आखेट पर,
छुप न पाते पशु सरीखे लोभ कोई ठौर में ।।3 ।।

आशा देशमुख
पत्नी - श्री विरेन्द्र कुमार देशमुख
उप प्रबंधक (मा सं - सीएसआर)

गर्मी की छुट्टी और मैं

गर्मी की छुट्टी लगे कितनी सुहानी
देर तक बातें और बच्चों की मनमानी

मायके की खुशियां, यात्रा जानी-पहचानी
रेल के इंतजार में, बैठ नाना-नानी

भाइयों की बहना, भाभियों की नंदरानी
भतीजी और भांजों की मीठी बोल-बानी

मन का भोजन, हाथों में मिलता पानी
मिलना-मिलाना, कुछ बचपन सी रवानी

चाट पकौड़ी हलवा, समोसे की चाहत पुरानी
मम्मी की साड़ी , है पसंद आज भी आनी

बाजार, सिनेमा, जी भर फोटो खिचानी
बीते एक मास, जैसे बहता हुआ पानी

आया पति जी का फोन, क्या और सेवा करानी ??
संभालो अपना महल, गृहलक्ष्मी तुम महारानी!!

फिर से एक यात्रा, पर अब आंखों में पानी
एक साल के मौसम, अंत में है गर्मी आनी

फिर गर्मी की छुट्टी, फिर से वही कहानी
फिर गर्मी की छुट्टी और फिर से वही कहानी!!

नेहा अग्रवाल
पत्नी - श्री मनीष अग्रवाल
उप महाप्रबन्धक (एमजीआर)

नई सुबह

नई सुबह की नई किरण
ले आई जीवन में मधुर संपदन
सपनों को पंख मिल जाए
हर दिल में उम्मीद जगाए
हरि माली की चादर ओढ़
नदियों का मधुर गान
छत्तीसगढ़ की प्यारी धरती
कोरबा जिसकी है पहचान

कोयले की गहराई से
ऊर्जा का होता निर्माण
मेहनत से चमकता कोरबा
देश का बढ़ता मान
सीख यहां की सरलता सिखाएं
मेहनत का दे सम्मान

हर दिल में बसता कोरबा
सच्चा भारत का अभिमान
जीवन का सच्चा सार है
यही सबसे बड़ा उपहार है
आओ मिलकर वचन ये ले
रखेंगे इसे स्वच्छ ऑर महान
प्रकृति की रक्षा करते हुए
बढ़ाएंगे कोरबा की शान

आभा गौर
पत्नी - श्री राजमंगल गोड
वरिष्ठ प्रबंधक (कोल हैंडलिंग प्लांट)

एफजीडी (फ्ल्यू गैस डीसल्फराइजेशन): स्वच्छ पर्यावरण की दिशा में एक सशक्त कदम

कोयले से चलने वाले तापीय विद्युत संयंत्र राष्ट्र की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, परंतु इन के साथ एक चुनौती भी जुड़ी होती है—धुएँ में उपस्थित सल्फरडाइ ऑक्साइड (SO_2)।यही गैस वायु प्रदूषण और अम्ल वर्षा का प्रमुख कारण बनतीहै।आधुनिक तकनीक ने इस समस्या का प्रभावी समाधान दिया है—FGD (Flue Gas Desulphurization)।

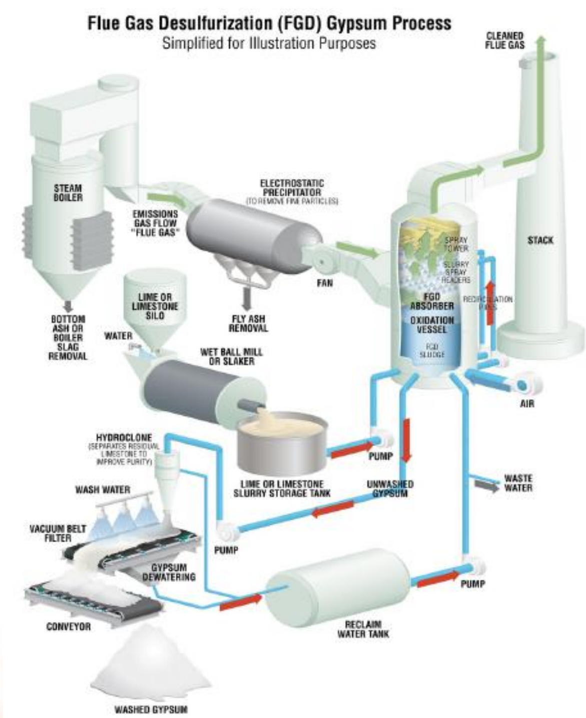

FGD एक ऐसी प्रणाली है, जो furnace से निकलने वाली गैसों को शुद्ध करती है।जब धुआँ FGD की मशीन (absorber) में प्रवेश करता है, तो उस पर चूना पत्थर (Limestone) का घोल छिड़का जाता है।इस प्रक्रिया में SO_2 रासायनिक अभिक्रिया के माध्यम से हट जाता है और अंततः जिप्सम (Gypsum) का निर्माण होता है, जिसका उपयोग सीमेंट एवं निर्माण कार्यों में किया जाता है।इस प्रकार, जो तत्व कभी प्रदूषण का कारण था, वही अब उपयोगी संसाधन बन जाता है।

संक्षेप में यदि इसके प्रमुख घटकों की बात करें, तो FGD में एब्जॉर्बर टावर (जहाँ गैस की सफाई होती है), स्प्रेसिस्टम (लाइमस्टोन घोल का छिड़काव), स्लरीटैंक, जिप्सम डिवॉटरिंग सिस्टम तथा चिमनी (स्टैक) शामिल होते हैं।ये सभी मिलकर एक प्रभावी शुद्धि करण प्रक्रिया को सुनिश्चित करते हैं।

FGD प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह SO_2 उत्सर्जन को 90% से अधिकतककम कर देती है तथा अम्ल वर्षा से भी बचाती है । इससे न केवल पर्यावरणीय मानकों का पालन सुनिश्चित होता है, बल्कि मानव स्वास्थ्यऔर प्राकृतिक संतुलन की भी रक्षा होती है।स्वच्छ वायु, सुरक्षित जीवन और हरित भविष्य—ये सभी FGD की देन हैं। NTPC का यह प्रयास "ऊर्जा उत्पादन के साथ पर्यावरण संरक्षण" की भावना को दर्शाता है, जहाँ विकास और प्रकृति एक साथ आगे बढ़ते हैं।

NTPC ने सदैव "ऊर्जा के साथ उत्तर दायित्व" के सिद्धांत को अपनाया है । FGD प्रणाली का कार्यान्वयन इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है । यह केवल तकनी की उन्नति नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी का प्रती कहै।

FGD हमें यह सिखाता है कि विकास और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि सहयोगी हो सकते हैं ।जब विज्ञान संवेदन शीलता के साथ जुड़ता है, तब वह केवल प्रगति ही नहीं, बल्कि एक स्वच्छ और सुरक्षित भविष्य भी सुनिश्चित करता है ।

धुएँ को भी हमने अब दिशा दे दी है नई,
प्रकृति के संग चलने की सीख ले ली है सही ।

FGD की यह कहानी बस इतनी सी बात कहती है—
सच्ची प्रगतिवही, जो प्रकृति के साथ रहती है।

रंजन कुमार श्रीवास्तव
उप महाप्रबन्धक (एफ जी डी)

फ्लाई ऐश से भविष्य निर्माण: FALG एग्रीगेट प्लांट की नई तकनीक (तकनीकी विश्लेषण)

भारत में बढ़ते औद्योगिकीकरण के साथ फ्लाई ऐश (Fly Ash) का प्रबंधन एक बड़ी चुनौती बन गया है। कोयला आधारित ताप विद्युत संयंत्रों से निकलने वाला यह उप-उत्पाद पर्यावरण के लिए हानिकारक हो सकता है। ऐसे में FALG (Fly Ash Lime Gypsum) आधारित एग्रीगेट तकनीक एक क्रांतिकारी समाधान के रूप में उभरकर सामने आई है। NTPC कोरबा में स्थापित 100 m^3/दिन क्षमता का FALG पायलट प्लांट इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है, जो अपशिष्ट को संसाधन में बदलने का उदाहरण प्रस्तुत करता है।

कैसे काम करता है FALG प्लांट?

इस प्लांट की प्रक्रिया अत्यंत व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक है। मुख्य चरण निम्नलिखित हैं:

- फ्लाई ऐश + चूना (Binder) + पानी का मिश्रण
- मिक्सिंग और कम्पैक्शन
- स्टीम/ऑटोक्लेव क्योरिंग
- क्रशिंग कर एग्रीगेट तैयार करना

यह पूरी प्रक्रिया फ्लाई ऐश को मजबूत, टिकाऊ एवं निर्माण योग्य सामग्री में परिवर्तित करती है।

कच्चा माल – सरल लेकिन प्रभावी :

इस तकनीक की खास बात इसका सरल मिश्रण है:

- फ्लाई ऐश: ~88%
- हाइड्रेटेड लाइम: ~12%
- पानी: आवश्यकतानुसार(~18%)

यह संयोजन उच्च मजबूती एवं टिकाऊपन प्रदान करता है।

प्लांट की प्रमुख तकनीकी विशेषताएँ :

- क्षमता: 100 m^3/दिन एग्रीगेट; 55000 ईंट/दिन
- PLC आधारित ऑटोमेशन सिस्टम
- ऑटोक्लेव क्योरिंग तकनीक
- आधुनिक क्रशिंग एवं स्क्रीनिंग यूनिट
- सुरक्षित इलेक्ट्रिकल एवं सिविल डिजाइन

यह प्लांट पूरी तरह से ऑटोमेटेड है, जिससे गुणवत्ता और उत्पादन दोनों में निरंतरता बनी रहती है।

इन्फ्रास्ट्रक्चर एवं सिस्टम :

प्लांट में शामिल प्रमुख यूनिट्स:

- रॉ मटेरियल हैंडलिंग सिस्टम
- मिक्सर एवं ब्रिक प्रेस
- ऑटोक्लेव (Steam curing)
- क्रशर एवं वाइब्रेटिंग स्क्रीन
- कन्वेयर एवं स्टोरेज

साथ ही, आधुनिक PLC और SCADA सिस्टम द्वारा रियल-टाइम मॉनिटरिंग और नियंत्रण सुनिश्चित किया जाता है।

पर्यावरण और अर्थव्यवस्था पर प्रभाव :

- फ्लाई ऐश का पुनः उपयोग →प्रदूषण में कमी
- प्राकृतिक एग्रीगेट की बचत
- कम लागत में निर्माण सामग्री
- ऊर्जा दक्ष एवं ग्रीन टेक्नोलॉजी

यह तकनीक "Waste to Wealth" का उत्कृष्ट उदाहरण है।

भविष्य की संभावनाएँ :

FALG एग्रीगेट प्लांट न केवल वर्तमान पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान है, बल्कि यह भारत के निर्माण क्षेत्र में एक स्थायी बदलाव ला सकता है। आने वाले समय में स्मार्ट सिटीज़ और ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर में इसकी भूमिका और भी महत्वपूर्ण होगी।

फ्लाई ऐश आधारित एग्रीगेट तकनीक उद्योग और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करने का एक सशक्त माध्यम है। NTPC का यह प्रयास न केवल तकनीकी दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह सतत विकास की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम भी है।

रविन्द्र गुप्ता
उप महाप्रबंधक (सी एवं टी)

"अपशिष्ट से संसाधन की ओर – यही है भविष्य का निर्माण।"

गर्मियों की छुट्टियाँ: मुट्ठी भर यादें

हमारे जीवन में कुछ दिन ऐसे होते हैं, जिन्हें याद करते ही मन अनायास ठहर जाता है। कभी-कभी लगता है—यदि सच में कोई विकल्प होता, तो क्या हम बड़े होना चुनते? - शायद नहीं। गर्मियों की छुट्टियाँ उन्हीं अनमोल दिनों में से एक हैं, जहाँ स्मृतियाँ केवल याद नहीं रहतीं, बल्कि भीतर कहीं फिर से जी उठती हैं।

बचपन में हम उन तपती, सुस्त गर्मियों का भी बड़े उत्साह से इंतज़ार करते थे। सुबह आँख खुलते ही यह एहसास कि आज स्कूल नहीं जाना है, एक अनकही स्वतंत्रता का अनुभव कराता था। न कोई घड़ी की जल्दबाज़ी, न किसी दिनचर्या का दबाव—बस एक लंबा, शांत दिन, जो केवल हमारा होता था।

ठंडी फर्श पर लेटे हुए, ऊपर घूमता पंखा और पास चलता कूलर मानो हमारे लिए ही गर्मी से एक अनवरत संघर्ष कर रहे हों। ऐसे में माँ के हाथों की बनी ठंडी, मीठी लस्सी—जिस पर चॉकलेट, सूखे मेवे और नारियल की सजावट होती थी— सिर्फ एक पेय नहीं, बल्कि स्नेह का स्वाद थी। उन क्षणों में एक मासूम-सा विश्वास होता था कि शायद यही सुख जीवन का सबसे सच्चा रूप है, जैसे हम किसी छोटे-से राजमहल के राजा-रानी हों।

धीरे-धीरे वे आलस भरी सुबहें लंबी, शांत दोपहरों में परिवर्तित हो जाती थीं। दिन मानो विस्तृत होते जाते थे, और दोपहर की नींद भी—"पखाल भात" से भरे हुए पेट के साथ—और गहरी हो जाती थी।
सांझ का समय आते-आते गलियाँ बच्चों की आवाज़ों से गूंज उठती थीं। एक घर से दूसरे घर तक मित्रों को पुकारते हुए हम सब एक साथ खेल में डूब जाते थे। उधर घरों की स्त्रियाँ भी दिनभर की व्यस्तता के बाद कुछ क्षणों का विश्राम पातीं—आँगन में बैठकर बातचीत, हँसी और जीवन के छोटे-बड़े प्रसंगों का आदान-प्रदान।

फिर रात के होते ही घर लौट कर जैसे-तैसे पिताजी की कड़ी निगरानी में कम से कम 1 घंटे की पढ़ाई कर हम इंतज़ार करते की कब माँ रात्रि-भोज के लिए बुलाएगी । और फिर रात के भोजन के बाद हम एक गहरी, सुकून भरी नींद में सो जाते थे, यह जानकर कि अगला दिन भी उतना ही शांत और आरामदायक होने वाला है। सचमुच.. वो कितने सुहाने दिन थे !

गर्मियों की छुट्टियाँ ननिहाल की यात्रा के बिना कभी पूर्ण नहीं होती थीं। हमारी तरह सहर के बच्चों के लिए वह स्थान किसी निजी स्वर्ग से कम नहीं था। सुबह मंदिर की घंटियों और पशुओं की ध्वनि से जागना एक विशिष्ट अनुभव था। आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो समझ आता है कि बच्चों के लिए जल्दी उठना कभी कठिन नहीं था—कठिन था वही एकरस दिनचर्या।

नानी के घर का वातावरण सदा जीवंत रहता था। मिट्टी के चूल्हों पर बनते व्यंजनों की सुगंध—विशेषतः आम के अचार और चावल के पकवान—घर के हर कोने में घुली रहती थी। हम बच्चों को सुबह उठते ही भोजन मिल जाता और फिर दोपहर तक पूर्ण स्वतंत्रता।

आम के बागों में खेलना, कल्पनाओं में व्यंजन बनाना, काल्पनिक राक्षसों से एक-दूसरे को बचाना—हर दिन एक नई कथा रचता था। केवल एक स्थान निषिद्ध था—वह कुआँ, जिस में निवास कर रहे भयानक राक्षस ने अब तक सफलतापूर्वक हर पीढ़ी के बच्चों को उस कुएं से दूर रखा है ।

दोपहर के भोजन के पश्चात एक गहन विश्राम, और फिर सायंकाल मंदिर के आँगन में खेलते बच्चे तथा आसपास बैठे परिजनों की सजीव बातचीत— ये सब मिलकर गाँव की एक पूर्ण दृश्य रचते थे। कभी-कभी हमें पढ़ाने की कोशिश भी होती, लेकिन नानी हमेशा हमारी ढाल बन जाती—“बच्चे छुट्टियाँ मनाने आए हैं, पढ़ाई तो स्कूल में होती ही रहेगी।”

और फिर आते थे हमारे पसंदीदा धारावाहिक। छोटा-सा टीवी, और उसके सामने हम सब—कोई फर्श पर, कोई सोफे पर, कोई बिस्तर पर। उस समय बैठने के स्थान से कोई फर्क नहीं पड़ता था, बस साथ होना ही काफी था।

रात का सबसे खूबसूरत हिस्सा होता था नानाजी के साथ बैठना। उनका वही अंदाज़—“पता है, बहुत समय पहले क्या हुआ था...” और फिर शुरू होती कहानियाँ—महाभारत की, रामायण की, हनुमान जी की- इतनी जीवंत कि लगता था नानाजी खुद उन घटनाओं के गवाह रहे हों। हर कहानी के बाद एक नया सवाल- “फिर क्या हुआ?” -और फिर धीरे-धीरे आँखें बोझिल हो जातीं, और हम सपनों की दुनिया में खो जाते, चाँद और तारों से भरी विस्तृत आकाश के नीचे ।

गाँव से वापस आने का आखिरी दिन हमेशा मन को भारी कर देता था। वह केवल एक स्थान से विदाई नहीं होती थी, बल्कि उन सभी अनुभवों से अस्थायी दूरी थी, जो हमें सहारों में अपने छोटे से एकल परिवार में नहीं मिलती ।

इसके बाद आरंभ होता था वास्तविकता का सामना—दो महीने का अवकाश-कार्य (Holiday Homework) कुछ ही दिनों में पूर्ण करने का प्रयास, और ईश्वर से यही प्रार्थना कि छुट्टियाँ थोड़ी और बढ़ जाएँ। गर्मियों की प्रचंडता के कारण कभी-कभी यह प्रार्थना सच भी हो जाती थी।

लेकिन जैसे जीवन के हर सुंदर अध्याय का अंत होता है, वैसे ही ये छुट्टियाँ भी समाप्त हो जाती थीं—पीछे छोड़ जाती थीं स्मृतियों की एक उजली पोटली, और आगे के दिनों के लिए एक कोमल-सी प्रतीक्षा।

आज जब उन पलों को याद करती हूँ, तो महसूस होता है कि वे केवल बीते हुए दिन नहीं थे, बल्कि जीवन के वे सहज सत्य थे, जिन्होंने हमें सिखाया कि खुशी केवल किसी बड़ी उपलब्धि में नहीं, बल्कि उन छोटे, अनदेखे क्षणों में भी छिपी होती है।

शायद यही कारण है कि हम इन यादों को अपने भीतर संजोए रखते हैं—ताकि जीवन की भागदौड़ में जब कभी मन थक जाए, तो हम वहीं लौट सकें- उस ठंडी फर्श पर, उस हल्की हवा में, उस निश्चिंत बचपन में—जहाँ सब कुछ कम था, पर खुशी पूरी थी।

आराधना प्रधान
प्रबंधक (मानव संसाधन)

जार-जुआरी-बारजा-राह बारे सुनार: लोक-बुद्धि की कालातीत प्रासंगिकता और आधुनिक धोखे

मनुष्य का इतिहास केवल वैज्ञानिक प्रगति और तकनीकी आविष्कारों का इतिहास नहीं है, बल्कि यह छल, भ्रम और विश्वासघात के अनुभवों से उपजी सतर्कता का भी एक निरंतर सीखने वाला क्रम है। जैसे-जैसे समाज का ढांचा विकसित हुआ, वैसे-वैसे धोखे के रूप और माध्यम भी बदलते गए, परंतु उनका मूल स्वभाव सदैव वही रहा: किसी व्यक्ति का विश्वास अर्जित करना और फिर स्वार्थ सिद्धि हेतु उसे तोड़ देना। राजस्थान की लोक-संस्कृति और ग्रामीण अंचलों में प्रचलित एक अत्यंत गूढ़ और व्यावहारिक कहावत है

"जार, जुआरी, बारजा, राह-बारे सुनार – इन सूं सदा रहो होशियार।"

यह पंक्ति केवल शब्दों का समूह नहीं, बल्कि सदियों के कड़वे अनुभवों का निचोड़ है, जो आज के अत्यंत जटिल डिजिटल युग में भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी वह सदियों पहले थी। विशेषकर आज, जब NTPC Limited जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों के तकनीकी रूप से दक्ष और शिक्षित कर्मचारी भी ऑनलाइन ट्रेडिंग स्कैम और साइबर जालसाजी के शिकार हो रहे हैं, तब इस पारंपरिक ज्ञान का पुनर्मूल्यांकन करना अनिवार्य हो जाता है। यह लेख इस कहावत के गहरे दार्शनिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आयामों को आधुनिक संदर्भों के साथ जोड़कर समझने का एक विस्तृत प्रयास है।

इस कहावत का विस्तार करने से पूर्व इसके मूल शब्दों के अर्थ को समझना आवश्यक है। यहाँ 'जार' का अर्थ उस जालसाज इंसान से है जो अपनी मीठी बातों और कृत्रिम व्यवहार से दूसरों को अपने चंगुल में फँसाता है। 'जुआरी' वह व्यक्ति है जो अपनी अनिश्चित किस्मत पर दांव लगाता है और दूसरों के संसाधनों को भी जोखिम में डालता है। 'बारजा' उस व्यक्ति को कहा जाता था जो किसी चोर के पीछे या किसी खोए हुए पशु को खोजने के लिए निकला हो, जिसकी दिशा और वापसी का कोई ठिकाना न हो। अंत में, 'राह-बारे सुनार' वह है जो गलियों में घूमकर सोना बेचता है और जिसकी कोई स्थायी दुकान नहीं होती। ये चारों ही चरित्र अनिश्चितता और जोखिम के प्रतीक हैं। प्राचीन काल में ये लोग भौतिक रूप से समाज में मौजूद थे, लेकिन आज इन्होंने डिजिटल मुखौटे पहन लिए हैं। यह कहावत हमें सिखाती है कि सुरक्षा केवल कानूनों में नहीं, बल्कि हमारी सहज बुद्धि और सतर्कता में निहित है।

जार और डिजिटल जालसाज: विश्वास का मनोवैज्ञानिक जाल

'जार' यानी जालसाज का मुख्य हथियार तकनीक नहीं, बल्कि मनोविज्ञान होता है। एक जार वह व्यक्ति है जो जानता है कि सामने वाले का विश्वास कैसे जीतना है। वह पहले आपके भीतर एक सुरक्षा का बोध कराएगा, आपकी समस्याओं के प्रति सहानुभूति दिखाएगा और फिर धीरे से एक ऐसा जाल बुनेगा जहाँ आप स्वेच्छा से अपनी संपत्ति उसे सौंप देंगे। दार्शनिक दृष्टि से देखें तो यह 'माया' का वह आधुनिक रूप है जहाँ वास्तविकता और भ्रम के बीच की रेखा पूरी तरह धुंधली हो जाती है। आज के डिजिटल युग में ये 'जार' साइबर अपराधियों के रूप में हमारे सामने हैं। वे सोशल मीडिया पर 'इन्वेस्टमेंट गुरु' बनकर आते हैं या व्हाट्सएप और टेलीग्राम ग्रुप्स में लुभावने ऑफर देते हैं।

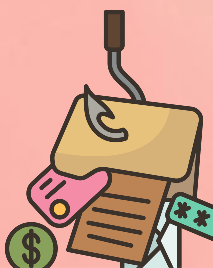

ये आधुनिक जालसाज पहले छोटा लाभ दिखाकर व्यक्ति का भरोसा जीतते हैं और फिर उसके भीतर लालच की अग्नि प्रज्वलित करते हैं। अरस्तु ने एक बार कहा था कि

“भावनाओं की विजय अक्सर तर्कशक्ति की हार होती है।“

जब एक अपराधी आपको यह विश्वास दिला देता है कि आप रातों-रात अमीर बन सकते हैं, तो आपका विवेक (Reason) पीछे छूट जाता है और भावनाएँ (Emotions) निर्णय लेने लगती हैं। जार से सावधान रहने की चेतावनी आज के संदर्भ में उन अज्ञात लिंक, फर्जी कॉल और लुभावने विज्ञापनों से बचने की प्रेरणा देती है जो हमारे विश्वास को पूंजी बनाकर हमें लूटते हैं।

जुआरी की मानसिकता और जोखिम का भ्रम

कहावत का दूसरा महत्वपूर्ण पात्र ‘जुआरी’ है। जुआरी पर भरोसा करना हमेशा घाटे का सौदा क्यों होता है? इसका कारण उसकी वह मानसिकता है जिसमें वह मानता है कि ‘बस अगली बाजी’ उसकी होगी। यदि आप उसे इस उम्मीद में उधार देते हैं कि वह जीतकर आपका पैसा लौटा देगा, तो आप उसकी हार के साथ-साथ अपने पैसे भी गँवा देते हैं। जुआ केवल ताश के पत्तों तक सीमित नहीं है, यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जो कम समय में, बिना श्रम के अधिक लाभ पाने की इच्छा से जन्म लेती है। आज के ऑनलाइन ट्रेडिंग स्कैम और अनियंत्रित सट्टेबाजी वाले ऐप्स इसी जुआरी मानसिकता का फायदा उठाते हैं।

जब कोई फर्जी ऐप आपसे कहता है कि "यहाँ निवेश करें और अगले घंटे में पैसा दोगुना पाएँ," तो वह आपकी उसी जुआरी प्रवृत्ति को उकसा रहा होता है। **डेनियल काह्नमैन के ‘प्रॉस्पेक्ट थ्योरी’ के अनुसार, मनुष्य लाभ की संभावना को देखते हुए जोखिम का गलत आकलन कर बैठता है।** जुआरी का कोई भरोसा नहीं होता क्योंकि उसका अपना कोई आधार नहीं है; वह पूर्णतः संयोग पर निर्भर है। इसी प्रकार, जो निवेश योजनाएँ केवल संयोग और अनिश्चितता पर आधारित हैं, वे अंततः व्यक्ति को आर्थिक गर्त में ले जाती हैं। जुआरी से होशियार रहने का अर्थ है कि हम अपने जीवन की मेहनत की कमाई को किसी अनिश्चितता के हवाले न करें।

बारजा और अनिश्चितता का अस्तित्ववादी संकट

‘बारजा’ वह व्यक्ति है जो किसी खोज में निकला है। पुराने समय में जब कोई व्यक्ति चोर के पीछे या पशु ढूँढने निकलता था, तो उसके लौटने की कोई निश्चित अवधि नहीं होती थी। यदि ऐसे व्यक्ति को कोई अपनी सवारी (जैसे ऊँट या घोड़ा) उधार दे दे, तो वह वस्तु एक प्रकार से खोई हुई ही मानी जाती थी क्योंकि बारजा का न तो कोई ठिकाना होता था और न ही कोई तय रास्ता। आधुनिक संदर्भ में, ‘बारजा’ उन गुमनाम संस्थाओं और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रतिनिधित्व करता है जिनका कोई भौतिक अस्तित्व नहीं है।

अनेक बार हम ऐसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म्स पर पैसा लगा देते हैं जिनके मुख्यालय का पता नहीं होता, जिनके पीछे कौन लोग हैं यह स्पष्ट नहीं होता।

वे डिजिटल दुनिया में ‘बारजा’ की तरह भ्रमणशील हैं। आज वे एक नाम से सक्रिय हैं, कल वे किसी और नाम से होंगे। एक बार जब आपका पैसा या आपका डेटा उनके पास चला जाता है, तो आप उन्हें ट्रैक नहीं कर पाते। यह अनिश्चितता न केवल आर्थिक हानि पहुँचाती है, बल्कि व्यक्ति के भीतर एक अस्तित्ववादी संकट भी पैदा करती है। जब कोई व्यक्ति अपनी जमा-पूंजी ऐसे अज्ञात हाथों में खो देता है, तो उसका व्यवस्था, तकनीक और यहाँ तक कि स्वयं की निर्णय क्षमता पर से विश्वास उठ जाता है।

अतः, बारजा से होशियार रहने की सीख हमें यह बताती है कि बिना उत्तरदायित्व (Accountability) और पहचान के किसी को भी अपने संसाधन नहीं सौंपने चाहिए।

राह-बारे सुनार और अस्थायी विश्वास की समस्या

कहावत का अंतिम भाग 'राह-बारे सुनार' के प्रति सचेत करता है। सुनार का कार्य विश्वास और शुद्धता पर आधारित होता है। यदि हम दुकान से सोना खरीदते हैं, तो हमारे पास एक स्थायी ठिकाना होता है जहाँ हम किसी भी खोट की शिकायत कर सकते हैं। लेकिन जो सुनार गलियों में घूमकर सोना बेच रहा है, वह अस्थायी है। एक बार सौदा होने के बाद वह कहाँ ओझल हो जाएगा, कोई नहीं जानता। आज के दौर में, वे सभी फर्जी वेबसाइट्स, अज्ञात मोबाइल ऐप्स और अनधिकृत निवेश सलाहकार 'राह-बारे सुनार' ही हैं।

वे आपको चमकदार और आकर्षक 'डिजिटल सोना' (रिटर्न) दिखाते हैं, लेकिन उस चमक के पीछे पीतल जैसी असलियत होती है। विश्वास तभी सार्थक होता है जब उसके पीछे जवाबदेही हो। राह-बारे सुनार के पास जवाबदेही का अभाव होता है। आधुनिक उपभोक्तावाद के इस युग में हमें यह समझने की जरूरत है कि हर चमकती हुई चीज़ सोना नहीं होती और हर वह व्यक्ति जो आपके पास चलकर आ रहा है (चाहे वह आपके इनबॉक्स में ही क्यों न आए), वह आपका हितैषी नहीं हो सकता। अस्थायी स्रोतों से स्थायी लाभ की अपेक्षा करना ही ठगे जाने का मुख्य कारण है।

शिक्षित वर्ग और स्कैम:

यह एक विडंबनापूर्ण सत्य है कि आज के समय में केवल अनपढ़ या ग्रामीण लोग ही ठगे नहीं जा रहे, बल्कि NTPC Limited जैसे विशाल और प्रतिष्ठित संस्थानों के उच्च शिक्षित अधिकारी और कर्मचारी भी इन स्कैम्स के जाल में फँस रहे हैं। आखिर ऐसा क्यों होता है? इसके पीछे कई सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारण हैं। पहला कारण 'आर्थिक आकांक्षा' है। आज के प्रतिस्पर्धी युग में हर व्यक्ति तेजी से अपनी जीवनशैली सुधारना चाहता है, जो उसे जोखिम लेने के लिए प्रेरित करती है। दूसरा कारण 'डिजिटल भ्रम' है। स्कैमर्स इतने पेशेवर तरीके से ऐप्स और वेबसाइट्स डिजाइन करते हैं कि एक तकनीकी व्यक्ति भी उन्हें असली मान बैठता है।

तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण कारण 'सोशल प्रूफ' या सामाजिक दबाव है।

जब किसी ऑफिस के व्हाट्सएप ग्रुप में कुछ लोग फर्जी मुनाफे के स्क्रीनशॉट साझा करते हैं, तो दूसरे कर्मचारियों को लगता है कि वे एक बड़े अवसर से चूक रहे हैं (जिसे आधुनिक भाषा में FOMO - Fear Of Missing Out कहा जाता है)। इसके अलावा, शिक्षित व्यक्तियों में अक्सर 'अति-आत्मविश्वास' होता है। उन्हें लगता है कि वे इतने समझदार हैं कि कोई उन्हें बेवकूफ नहीं बना सकता। यही अति-आत्मविश्वास उनके बचाव कवच में छेद कर देता है और वे 'जार' या 'जुआरी' के झांसे में आ जाते हैं।

यह राजस्थानी कहावत केवल एक सामाजिक चेतावनी नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने का एक दार्शनिक मार्ग भी प्रशस्त करती है। यह हमें चार प्रमुख मूल्यों की शिक्षा देती है: विवेक, संयम, संदेह और उत्तरदायित्व। विवेक हमें हर निर्णय से पहले उसकी सत्यता परखने की शक्ति देता है। संयम हमें अत्यधिक लोभ से बचाता है, जो सभी अनर्थों की जड़ है।

एक स्वस्थ संदेह (Healthy Skepticism) हमें हर आकर्षक प्रस्ताव पर तुरंत विश्वास करने से रोकता है। और अंत में, उत्तरदायित्व हमें सिखाता है कि हमें केवल उन्हीं पर भरोसा करना चाहिए जो अपनी पहचान और कार्यों के प्रति जवाबदेह हों।

इस समस्या का समाधान केवल कड़े कानूनों या उन्नत तकनीक में नहीं है, बल्कि चेतना के स्तर पर है। हमें अपनी जड़ों की ओर लौटना होगा और उस पारंपरिक लोक-ज्ञान को फिर से समझना होगा जो हमारे पूर्वजों ने हमें दिया है। डिजिटल साक्षरता आज के समय की मांग है, लेकिन उससे भी बड़ी मांग 'मानसिक साक्षरता' की है। संस्थानों को चाहिए कि वे अपने कर्मचारियों के लिए केवल तकनीकी प्रशिक्षण ही नहीं, बल्कि वित्तीय सतर्कता और मनोवैज्ञानिक मजबूती के सत्र भी आयोजित करें।

सावधानी ही एकमात्र सुरक्षा है

यह कहावत हमें यह स्मरण कराती है कि समय बदल सकता है, माध्यम बदल सकते हैं, और सभ्यता के उपकरण बदल सकते हैं, परंतु मानवीय प्रवृत्तियाँ और धोखे के मूल सिद्धांत अपरिवर्तनीय रहते हैं। जो जालसाजी कल गांव की चौपाल पर होती थी, वह आज स्मार्टफोन की स्क्रीन पर हो रही है। अतीत की यह सीख वर्तमान की अनिवार्य आवश्यकता बन गई है।

सच्ची सुरक्षा किसी एंटी-वायरस सॉफ्टवेयर में नहीं, बल्कि हमारी जागरूकता में निहित है। यदि हम अपने विवेक को जागृत रखें और इन चार प्रकार के जोखिमों के आधुनिक रूपों को पहचान लें, तो हम न केवल स्वयं को आर्थिक और मानसिक क्षति से बचा सकते हैं, बल्कि एक सुरक्षित और स्वस्थ समाज का निर्माण भी कर सकते हैं। याद रखिये, जीवन की दौड़ में वह व्यक्ति कभी नहीं हारता जो सतर्क रहता है, क्योंकि अंततः "सावधानी ही सबसे बड़ी सुरक्षा है।" इस प्राचीन लोकबुद्धि को आधुनिक जीवन का मंत्र बनाकर ही हम धोखाधड़ी के इस डिजिटल महासागर को सुरक्षित रूप से पार कर सकते हैं।

"इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक और ग्रामीण सभी हिंदी को समझते हैं।"

- राहुल सांकृत्यायन

कंवर भान गोदरा
सहायक अधिकारी (पर्यावरण प्रबंधन)

अक्ती तिहार (अक्षय तृतीया)

- **अक्ती तिहार के महत्व (अक्षय तृतीया)**

अक्ती ह छत्तीसगढ़ के अनमोल तिहार आय हे। अक्ती ह शुभ काम अउ लगन मुहूर्त के महा पर्व आय। ए दिन बर पीपर, नीम अउ बेल के पेड़ म पानी रितोथे। गांव के जम्मो देवी-देवता, गौरा-गौरी, शीतला माता, ठाकुर देव, महामाई अउ बरम बाबा सब म नवा करसी म पानी भर के अर्पण करथें। भगवान महादेव म धोवा चांउर, चना दार अउ बेल पाना चढ़ाथें। कतको जन मन इही दिन ले शिवलिंग ऊपर म करसी नइ त तांबा के भड़वा म नानकुन भोड़ू करके बूंद-बूंद सल्लगहा पानी डारे के उदीम करथें अउ दिया बाती घलावंय बारथें। अक्ती के दिन गुरु मंत्र के जाप अउ कोनो देवी-देवता के पूजा-पाठ ह करोड़ों गुना फल देवइया होथे।

कहिथें

अक्ती के बासी अगहन के नून।
जेठ के पानी म अड़बड़ के पून।।

अक्ती के दिन कोनो ला जेवन जेवाय म, अगहन संग तरकारी देहे म, जेठ म कोनो ला एक लोटा पानी पीयाय म, एक अश्वमेघ अउ इंद्रदेव के पद पाय के फल मिलथे। तइहा जुग म अक्ती के दिन ले जगह-जगह पानी पियाय अउ चना खवाय के परथा ह असाढ़ के रजुतिया के दिन तक सल्लगहा चलते रहिथे।

- **पुत्रा-पुत्री के बिहाव**

अक्ती के महा पर्व म छत्तीसगढ़ एक अलग ही मनमोहक परंपरा हवय। गांव-गांव लइका मन माटी के पुत्रा-पुत्री के बिहाव करवाथें। ये बिहाव हर ठगरा-मुसारी के होथे। लइका मन के अलग-अलग टोली होके बाजा-गाजा के साथ बरात निकालथें अउ पूरे पारंपरिक ढंग ले रीति-रिवाज के साथ सब्बो रस्म ला निभाय जाथे।

- **खेती किसानी के शुरुवाती**

येही अक्ती तिहार ले हमर किसान मन अपन-अपन खेत बोआई के शुरुवात करथें अउ खेत ला जोताई करके धान के बोआई करथें, येला अकर्स बोआई कहिथें। गांव के सियान मन गांव के ठाकुर देव, बूढ़ी माई के पूजा-पाठ करथें अउ जादा ले जादा धान के ओनहारी होय के बरदान मांगथें।

- **अक्ती तिहार (अक्षय तृतीया)**

अक्ती तिहार ह जम्मो छत्तीसगढ़िया भाई-बहिनी मन बर अपन संस्कृति अउ परंपरा जीवन म जीवंत बनाय रखे के साथ-साथ सुख समृद्धि के आशा जगाथे। अउ महादेव ला जल दान अउ खेती-किसानी के शुरुवाती करे के नाम ह महापर्व अक्ती तिहार, येला अक्षय तृतीया के नाम ले घलो जाने जाथे।

सेवक राम कैवर्त
ड्राफ्ट्समेन (व्यावसायिक उत्कृष्टता)

ऊर्जा से विकास, विकास से विश्वास

भारत के ऊर्जा क्षेत्र में अग्रणी एनटीपीसी केवल विद्युत उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र के सतत विकास, स्व"भारत के विकास एवं ऊर्जा परिवर्तन को गति देते हुए विश्व की अग्रणी विद्युत कंपनी बनना।" है, जबकि इसका मिशन "नवप्रवर्तन एवं स्फूर्ति द्वारा संचालित रहते हुए किफ़ायती, दक्षतापूर्ण एवं पर्यावरण-हितैषी तरीके से विश्वसनीय विद्युत एवं ऊर्जा परिवर्तन सेवाएं प्रदान करना" है।

आज एनटीपीसी परंपरागत ऊर्जा के साथ-साथ हरित ऊर्जा (Green Energy) के क्षेत्र में भी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। कंपनी ने वर्ष 2032 तक 60 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ग्रीन हाइड्रोजन, बैटरी स्टोरेज एवं कार्बन उत्सर्जन नियंत्रण जैसी आधुनिक पहलों के माध्यम से एनटीपीसी भारत के ऊर्जा परिवर्तन का नेतृत्व कर रहा है।

ग्रीन हाइड्रोजन के क्षेत्र में एनटीपीसी की पहल विशेष रूप से उल्लेखनीय है। लेह-लद्दाख में विश्व की सर्वाधिक ऊँचाई पर ग्रीन हाइड्रोजन मोबिलिटी परियोजना तथा महाकुंभ 2025 में हाइड्रोजन बसों का प्रदर्शन, स्वच्छ परिवहन एवं ऊर्जा सुरक्षा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

पर्यावरण संरक्षण के लिए एनटीपीसी द्वारा फ्ल्यू गैस डीसल्फराइजेशन (FGD) प्रणाली, 100% फ्लाई ऐश उपयोग, जल संरक्षण, जैव विविधता संरक्षण तथा वृक्षारोपण जैसे अनेक कार्य किए जा रहे हैं। कंपनी अब तक करोड़ों वृक्षारोपण कर हरित भविष्य की दिशा में प्रभावी योगदान दे चुकी है।
एनटीपीसी की कार्यशैली केवल ऊर्जा उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के समग्र विकास से भी जुड़ी हुई है। शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, कौशल विकास एवं सामुदायिक उत्थान से जुड़े विभिन्न नैगम सामाजिक उतरदायित्व कार्यक्रम कंपनी की सामाजिक प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

"ऊर्जा से विकास, विकास से विश्वास" केवल कुछ शब्द नहीं, बल्कि एनटीपीसी की कार्यसंस्कृति और राष्ट्र निर्माण के प्रति उसकी अटूट प्रतिबद्धता का प्रतीक है। आधुनिक तकनीक, हरित ऊर्जा और सामाजिक सरोकारों के समन्वय से एनटीपीसी एक उज्ज्वल, सुरक्षित एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में निरंतर अग्रसर है।

"सतत भविष्य की ओर एनटीपीसी के सशक्त कदम"

महादेवी वर्मा : वेदना, विद्रोह और संवेदना की अमर स्वर-सरस्वती

कल्पना कीजिए—एक शांत कमरा। सफेद वस्त्रों में लिपटी एक स्त्री, सामने जलता दीपक, हाथों में कलम, और भीतर ऐसा अथाह समुद्र जिसमें करुणा भी है, विद्रोह भी, प्रेम भी और समाज को बदल देने की बेचैनी भी। वह केवल कविताएँ नहीं लिख रही थी, बल्कि हिंदी साहित्य की आत्मा को आकार दे रही थी। वह थीं — महादेवी वर्मा।

जन्म : जब सात पीढ़ियों बाद घर में आई "महादेवी"

26 मार्च 1907 की सुबह उत्तर प्रदेश के फ़र्रुख़ाबाद में एक बच्ची ने जन्म लिया। परिवार में लगभग दो सौ वर्षों बाद पुत्री का जन्म हुआ था। घर में उत्सव का वातावरण था। उनके बाबा बाबू बाँके बिहारी जी ने उस नवजात को घर की देवी माना और नाम रखा — महादेवी।

उनकी माँ हेमरानी देवी धार्मिक, संवेदनशील और संगीत-प्रेमी थीं। रामायण, गीता और विनय पत्रिका का पाठ उनके जीवन का हिस्सा था। दूसरी ओर पिता गोविंद प्रसाद वर्मा आधुनिक विचारों वाले, संगीत प्रेमी, नास्तिक और घूमने-फिरने के शौकीन व्यक्ति थे। यही विरोधी संस्कार आगे चलकर महादेवी के व्यक्तित्व में अद्भुत संतुलन बनाते हैं—आस्था और तर्क, करुणा और स्वाभिमान, संवेदना और विद्रोह।

बचपन : सात वर्ष की बच्ची और कविता का जन्म

महादेवी बचपन से ही असाधारण थीं। जब बच्चे खेलों में मग्न रहते हैं, तब वे शब्दों के संसार में खो जाती थीं। मात्र सात वर्ष की आयु में उन्होंने कविता लिखनी शुरू कर दी थी। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा इन्दौर के मिशन स्कूल में हुई। साथ ही घर पर संस्कृत, अंग्रेज़ी, संगीत और चित्रकला की शिक्षा भी दी गई। उनका मन पढ़ाई से अधिक भावनाओं और अभिव्यक्ति की दुनिया में बसता था।

विवाह : सामाजिक बंधन, पर आत्मा रही स्वतंत्र

1916 में उनका विवाह स्वरूप नारायण वर्मा से हुआ। उस समय भारतीय समाज में बाल-विवाह सामान्य बात थी। पर महादेवी का मन पारंपरिक वैवाहिक जीवन में कभी रमा नहीं।

उन्होंने विवाह को सामाजिक व्यवस्था की तरह स्वीकार किया, पर स्वयं को उसमें खोने नहीं दिया।

उन्होंने जीवन भर श्वेत वस्त्र पहने, सादगी अपनाई, तख्त पर सोईं और आत्मानुशासन को अपना साथी बनाया। वे एक साधिका की तरह जीवन जीती रहीं। उनका यह निर्णय केवल व्यक्तिगत नहीं था; यह उस स्त्री की घोषणा थी जो समाज की परिभाषाओं से ऊपर अपनी स्वतंत्र पहचान बनाना चाहती थी।

शिक्षा और साहित्य : छात्रावास से उठी एक अमर आवाज़

विवाह के बाद भी उन्होंने शिक्षा नहीं छोड़ी। उन्होंने क्रास्थवेट कॉलेज में प्रवेश लिया और छात्रावास में रहने लगीं। 1921 में आठवीं कक्षा में पूरे प्रांत में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी दौरान उनकी मुलाकात प्रसिद्ध कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान से हुई। दोनों की मित्रता हिंदी साहित्य के इतिहास में एक सुंदर अध्याय बन गई। 1932 में उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. किया। तब तक वे हिंदी साहित्य की स्थापित कवयित्री बन चुकी थीं।

छायावाद की "आधुनिक मीरा"

हिंदी साहित्य में छायावाद के चार महान स्तंभ माने जाते हैं—

जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और महादेवी वर्मा । इनमें महादेवी को "आधुनिक मीरा" कहा गया। उनकी कविताओं में विरह है, वेदना है, आध्यात्मिक प्रेम है, पर वह दुर्बलता नहीं—एक गहरी आत्मिक शक्ति है। उनकी कविता पढ़ते समय लगता है जैसे कोई दीपक अंधेरे से लड़ते हुए जल रहा हो।

उनकी कविताएँ : आँसू नहीं, चेतना की अग्नि

उनके प्रमुख कविता संग्रह हैं— नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, यामा । उनकी कविताओं में दर्द है, पर वह निराशा नहीं बनता, वह पाठक को भीतर से जागृत करता है। उनकी लेखनी मानो कहती है— "अंधकार को कोसने से बेहतर है, स्वयं दीपक बन जाना।"

केवल कवयित्री नहीं, समाज-सुधारक भी

महादेवी वर्मा केवल साहित्य तक सीमित नहीं रहीं। उन्होंने महिला शिक्षा और समाज सुधार के लिए अद्भुत कार्य किया। उन्होंने प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और उसकी प्रधानाचार्या तथा कुलपति रहीं। उस समय महिलाओं की शिक्षा के लिए यह कार्य क्रांतिकारी माना जाता था।

उन्होंने महिलाओं की प्रसिद्ध पत्रिका चाँद का संपादन भी किया।

नारी चेतना की प्रखर आवाज़

जब समाज स्त्रियों को सीमाओं में बाँध रहा था, तब महादेवी वर्मा स्त्री स्वतंत्रता की बात कर रही थीं।

उनकी प्रसिद्ध कृति शृंखला की कड़ियाँ केवल पुस्तक नहीं, भारतीय नारी की बेड़ियों के विरुद्ध एक सशक्त दस्तावेज़ है। उन्होंने स्त्री को दया की पात्र नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी व्यक्तित्व के रूप में देखा।

पशु-पक्षियों से प्रेम : संवेदना का विस्तार

महादेवी वर्मा का हृदय केवल मनुष्यों के लिए नहीं धड़कता था। पशु-पक्षियों से उनका प्रेम अद्भुत था। उनकी प्रसिद्ध रचना मेरा परिवार में उन्होंने गिलहरी, हिरन, गाय, नीलकंठ जैसे पशु-पक्षियों को परिवार का सदस्य मानकर लिखा। उनकी कहानी गिल्लू आज भी पाठकों की आँखें नम कर देती है।

चित्रकार, शिक्षिका और अनुवादक

बहुत कम लोग जानते हैं कि महादेवी एक कुशल चित्रकार भी थीं।

उन्होंने अपने कई कविता संग्रहों में स्वयं चित्र बनाए।

वे संगीत में निपुण थीं, इसलिए उनके गीतों में अद्भुत लय मिलती है।

उनकी भाषा में संस्कृत की कोमलता, बांग्ला की मधुरता और हिंदी की आत्मा एक साथ दिखाई देती है।

सम्मान : साहित्य आकाश का ध्रुवतारा

उनकी प्रतिभा को देश ने भरपूर सम्मान दिया।
उन्हें प्राप्त प्रमुख सम्मानों में शामिल हैं—
पद्म भूषण
पद्म विभूषण (मरणोपरांत)
साहित्य अकादमी सदस्यता प्राप्त करने वाली पहली महिला
ज्ञानपीठ पुरस्कार — काव्य संग्रह यामा के लिए
1982 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित होना हिंदी साहित्य के लिए गौरव का क्षण था।

अंतिम समय : पर शब्द अमर हो गए

11 सितम्बर 1987 को इलाहाबाद में उनका निधन हो गया।
पर वे वास्तव में कभी गई नहीं।
आज भी जब हिंदी कविता में करुणा, संवेदना, स्त्री चेतना और आत्मिक सौंदर्य की बात होती है, तब महादेवी वर्मा का नाम सबसे पहले लिया जाता है।
वे केवल कवयित्री नहीं थीं—

वे हिंदी साहित्य की आत्मा थीं।
एक दीपशिखा, जो आज भी जल रही है।

पारिभाषिक शब्दावली

Suo motu – स्वप्रेरणा से ।
Sub judice – न्यायाधीन ।
status quo – यथापूर्व स्थिति
Sine qua non – अनिवार्य शर्त
Rule nisi – प्रारंभिक आदेश
Proximo – आगामी मास का ।
Pro rata basis – अनुपात के अनुसार ।
Pro bono publico – जनहित में।
Pro bono publico – जनहित में।
Prima facie evidence – प्रथम दृष्ट्या साक्ष्य।

स्थगित करना - Adjourn
कृषि संबंधी - Agrarian
प्राधिकर सौंपना - Authorize
मूल वेतन - Basic Pay
बंध पत्र- Bond
संवर्ग - Cadre
जनगणना - Census
अधिग्रहण - Confiscate
एकमत - Consensus
रिवाज - Convention

हिंदी व्याकरण ज्ञान

1. ऊँट के मुँह में जीरा
- बहुत कम मात्रा में कुछ मिलना।
2.हाथ कंगन को आरसी क्या
- जो बात साफ़ हो उसे समझाने की जरूरत नहीं।
3.आसमान से बातें करना
- बहुत बड़ी उम्मीद रखना।
4.गर-मगर करना
– तर्क करना या टालमटोल करना
5.आटे के साथ घुन पिसना
– अपराधी के साथ निर्दोष को भी सजा मिलना

पर्यायवाची शब्द

नौका — तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी,डोंगी
पृथ्वी — धरा, वसुधा, वसुंधरा,इला, धरणी।
अधिकारी — पात्र, अधिपति, हकदार, विज्ञ।
चंद्र — विधु, शशि, सुधांशु, मृगांक, कलानिधि।

समस्या का दूसरा पहलू

पिता ऑफिस का काम करने में व्यस्त था. उसका 10 साल का बच्चा बार-बार कोई सा कोई सवाल लेकर उसके पास आता और पूछ-पूछकर तंग करता. बच्चे की इस हरकत से पिता परेशान हो रहा था.

इसका हल निकालते हुए उसने सोचा क्यों ना बच्चे को कोई ऐसा काम दे दूं, जिसमें वह कुछ घंटे उलझा रहे. उतने समय में मैं अपना काम निपटा लूंगा.

अबकी बार जब बच्चा आया, तो पिता ने एक पुरानी किताब उठा ली. उसके एक पेज पर वर्ल्ड मैप (World Map) बना हुआ था. उसने किताब का वह पेज फाड़ दिया और फिर उस पेज को कई छोटे-छोटे टुकड़ों में काट दिया. वे टुकड़े बच्चे को देते हुए बोला, "यह पेज पर वर्ल्ड मैप बना हुआ था. मैंने इसे कुछ टुकड़ों में बांट दिया है. तुम्हें इन टुकड़ों को जोड़कर फिर से वर्ल्ड मैप तैयार करना है. जाओ इसे जाकर जोड़ो. जब वर्ल्ड मैप बन जाये, तब आकर मुझे दिखाना."

बच्चा वो टुकड़े लेकर चला गया. इधर पिता ने चैन की सांस ली कि अब कई घंटों तक बच्चा उसके पास नहीं आयेगा और वह शांति से अपना काम कर पायेगा.

लेकिन ५ मिनट के भीतर ही बच्चा आ गया और बोला, "पापा, देखिये मैंने वर्ल्ड मैप बना लिया." पिता ने चेक किया, तो पाया कि मैप बिल्कुल सही जुड़ा था. उसने हैरत में पूछा, "ये तुमने इतनी जल्दी कैसे कर लिया?"

"ये तो बहुत ही आसान था पापा. आपने जिस पेज के टुकड़े मुझे दिए थे, उसके एक साइड पर वर्ल्ड मैप बना था, एक साइड पर कार्टून. मैंने कार्टून को जोड़ दिया, वर्ल्ड मैप अपने आप तैयार हो गया."

पिता बस बच्चे को देखता रह गया.

सीख : अक्सर हम कोई बड़ी समस्या सामने आने पर उसे देख ये सोच लेते हैं कि समस्या बहुत बड़ी है और वो हल हो ही नहीं सकती. हम उसका एक पहलू देखते हैं और अपना दृष्टिकोण बना लेते हैं. जबकि उसका दूसरा पहलू भी हो सकता है, जहाँ से उसका हल बहुत आसानी से निकल आ सकता है. इसलिए जीवन में जब भी समस्या आये, तो हर पहलू देखकर उसका आंकलन करना चाहिए. कोई न कोई आसान हल ज़रूर मिल जायेगा.

साभार - https://motivationalstoryinhindi.com

हिंदी - अँग्रेजी टिप्पणियाँ

As per above	ऊपर दिए अनुसार ।
A brief note is placed below	संक्षिप्त टिप्पणी नीचे रखी है ।
Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए ।
According to/in accordance with	के अनुसार
Accordingly it has been decided	तदनुसार निर्णय लिया गया है
According to convenience	सुविधानुसार
Act of misconduct	कदाचार/दुराचार
Act of commission and omission	भूल-चूक
Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए ।
Approved	अनुमोदित
As amended	यथा संशोधित
As compared to	की तुलना में
As directed	निदेशानुसार
As early as possible	यथाशीघ्र
As far as possible	यथासंभव
As far as practicable	यथाव्यवहार्य
As follows	निम्नानुसार
As may be necessary	यथावश्यक
As modified/revised	यथा संशोधित
As the case may be	जैसी स्थिति हो/यथास्थिति
As per	के अनुसार
As per details below	नीचे दिए गए विवरणानुसार
As per list enclosed/attached	संलग्न सूची के अनुसार
As regards	के संबंध में
As required	आवश्यकतानुसार/यथापेक्षित
As soon as possible	यथाशीघ्र
As usual	हमेशा की तरह
At an early date	जल्दी / शीघ्र
At any rate/stage	किसी भी दशा में / अवस्था में
At once	तत्काल/फौरन
Please Speak	कृपया बात करें ।

Please advise	कृपया सलाह दें ।
Please discuss	कृपया चर्चा करें ।
Ratified	अनुसमर्थित
Re-look	पुन: देखिए
After consultation with	के साथ परामर्श के बाद
I agree	मै सहमत हूँ ।
Keep Pending	लंबित रखें ।
Most urgent	अत्यावश्यक
Noted	नोट किया ।
OK	ठीक है ।
Please Confirm	कृपया पुष्टि करें ।
Please examine	कृपया जाँच करें ।
Sanctioned	मंजूर
Seen	देख लिया ।
Satisfactory	संतोषजनक
Thanks	धन्यवाद
Acceptance is awaited	स्वीकृति की प्रतीक्षा है ।
Accepted and passed for Payment	स्वीकृत किया और अदायगी के लिए पास किया ।
Accepted on trial basis	परीक्षण के आधार पर स्वीकृत किया ।
Accepted provisionally	अनंतिम रूप से स्वीकृत किया ।
Accord approval/sanction to	कृपया अनुमोदन/मंजूरी प्रदान करें ।
Acknowledgment is awaited	पावती की प्रतीक्षा है ।
Action as at ' A ' above	ऊपर 'क' के अनुसार कार्रवाई की जाए ।
Action is under way	कार्रवाई की जा रही है ।
Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए ।
Address all concerned	सर्वसंबंधित को लिखा जाए ।
Advise accordingly	तदनुसार सूचित करें ।
Advise further development	आगे की प्रगति से अवगत कराएँ ।
Advise telegraphically	तार द्वारा सूचित करें ।
Advise the action taken	की गई कार्रवाई से अवगत कराएँ ।
Agenda is sent herewith	कार्यसूची साथ भेजी जा रही है ।
Agenda will follow	कार्यसूची बाद में भेजी जाएगी ।
All concerned to note	सर्वसंबंधित नोट करें ।
Appear for interview	साक्षात्कार के लिए उपस्थित हों ।
Application rejected	आवेदन-पत्र अस्वीकृत / अर्जी नामंजूर

Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान किया जाए ।
Approved	अनुमोदित
Approved as per remarks in the margin	हाशिए की अभ्युक्तियों के अनुसार अनुमोदित
Approved as proposed	यथा प्रस्तावित अनुमोदित
As directed	निदेशानुसार
As modified	यथा संशोधित
Await arrival	आने की प्रतीक्षा करें ।
Await further advanced report	आगे और सूचना रिपोर्ट की प्रतीक्षा करें ।
Await reply	उत्तर की प्रतीक्षा करें ।
Background of the case	मामले की पृष्ठभूमि
Benefit of doubt	संदेह लाभ
Bill for signature please.	कृपया बिल पर हस्ताक्षर करें ।
Bill is outstanding	बिल बाकी है ।
Bills have been drawn	बिलों पर अदायगी ली जा चुकी है ।
Bills passed	बिल पास कर दिए गए ।
Brief note is placed below	संक्षिप्त टिप्पणी नीचे रखी है ।
Budget provision exists.	बजट प्रावधान मौजूद है ।
Calculation and rates checked.	प्रचालन और दरों की जाँच कर ली गई।
Call for explanation.	जबाब तलब किया जाए/स्पष्टीकरण माँगा जाए
Call for the file	फाइल मँगाई जाए।
Case has been badly delayed.	मामले में बहुत देर लगाई गई है।
Case has been closed.	मामला समाप्त कर दिया गया है।
Case is put up for orders	मामला आदेश के लिए प्रस्तुत है।
Case is under consideration.	मामला विचाराधीन है।
Certified copy	प्रमाणित प्रति।
Checked and found correct.	जांच की और सही पाया।
Circulate and then file.	संबंध व्यक्तियों को दिखाकर फाइल कर दें।
Claim is time barred	दावा कालातीत है।
Concurrence of Finance Branch may be obtained	वित्त शाखा की सहमति प्राप्त कर ली जाए।
Connect previous papers	पिछले कागज साथ लगाएँ।
Connect relevant papers and put up.	संबद्ध कागजों के साथ पेश करें।
Consolidated report may be called for.	समेकित रिपोर्ट मंगवा ली जाए।
Contract may be terminated.	संविदा/ठेका समाप्त कर दिया जाए।
Convey the decision to all concerned.	निर्णय की सूचना सभी संबंधितों को दे दें।
Copy has been forwarded for information/necessary action.	सूचना/आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रतिलिपि अग्रेषित कर दी गई है।

हिंदी - अँग्रेजी टिप्पणियाँ

Copy is enclosed for ready reference.	सुलभ संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न है।
Decision is awaited.	निर्णय की प्रतीक्षा है।
Delay in returning the file is regretted.	फाइल को लौटाने में हुई देरी के लिए खेद है।
Delay is regretted	देरी/विलम्ब के लिए खेद है।
Delay should be avoided.	विलम्ब नहीं होना चाहिए।
Delete the following lines.	निम्न पंक्तियों को निकाल/हटा दीजिए।
Demand has been noted.	मांग नोट कर ली गई है।
Discrepancy may be reconciled.	विसंगति का समाधान कर लिया जाए।
Discuss with papers.	संबंधित कागज लाकर चर्चा करें।
Do the needful.	आवश्यक कार्रवाई करें।
Draft as amended is put up.	यथासंशोधित मसौदा/प्रारूप प्रस्तुत है।
Draft is concurred in.	मसौदा/प्रारूप से सहमति है।
Draft is put up for approval.	प्रारूप अनुमोदनार्थ प्रस्तुत (पेश) है।
Draft may now be issued.	प्रारूप (मसौदा) अब जारी कर दिया जाए।
Draft reply is put up for approval.	उत्तर का मसौदा/प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
Early action please.	कृपया शीघ्र कार्रवाई करें।
Early reply is requested.	शीघ्र उत्तर भेजने की प्रार्थना है।
Earned leave sanctioned.	अर्जित छूट्टी /अवकाश मंजूर।
Eligibility is certified.	पात्रता प्रमाणित की जाती है।
Endorsement put up for signatures.	पृष्ठांकन हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत।
Enquire into this case and report early.	मामले की जांच करें और शीघ्र रिपोर्ट दें।
Enquiry has been ordered.	जांच का आदेश दे दिया गया है।
Ensure that reply is not delayed.	यह सुनिश्चित करें कि उत्तर देने में विलम्ब न हो।
Error is regretted.	त्रुटि/भूल/गलती के लिए खेद है।
Estimated cost	अनुमानित खर्च।
Expedite action.	शीघ्र कार्रवाई करें।
Expedite submission of report.	रिपोर्ट शीघ्र प्रस्तुत करें।
Expenditure is debatable to Head---	खर्च/व्यय शीर्ष--में नामे डाला जाना है।
Explanation from---has been obtained and is placed below.	-- से स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिया गया है तथा नीचे प्रस्तुत है।
Explanation may be called for.	स्पष्टीकरण माँगा जाए।
Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी
Facilities are not available.	सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।
File in question is placed below.	अपेक्षित फाइल नीचे रखी है।
File not readily traceable.	मिसिल/फाइल तत्काल नहीं मिल रही है।
File these papers.	ये कागज़ फाइल किए जाएँ।

विद्युत शब्दावली से कुछ सहायक शब्द

A.C. network analyser	ए.सी. नेटवर्क विश्लेषक
A.C. power supply	प्रत्यावर्ती विद्युत धारा आपूर्ति, ए.सी. विद्युत आपूर्ति
A.C. single phase outlet	ए.सी. सिंगल फेज आउटलेट, ए.सी. एकल फेज निर्गम
A.C. three phase outlet	ए.सी. थ्री फेज आउटलेट, ए.सी. तीन फेज निर्गम
Abatement of duty	शुल्क में कमी
Abatement	1. कमी 2. उपशमन
Abetment	दुष्प्रेरण
Ablation	अपक्षरण
Abolition	उन्मूलन
Above par value	अधिमूल्य
Abrasive	अपघर्षी, अपघर्षक
Abrasive, natural	प्राकृतिक अपघर्षक
Abrasive, soft	नर्म अपघर्षक
Abridged report	संक्षिप्त रिपोर्ट
Abrupt	1. अपच्छिन्न 2. आकस्मिक
Abrupt contraction	अपच्छिन्न संकुचन
Abrupt drop	अपच्छिन्न अवपात
Abrupt enlargement	अपच्छिन्न संवर्धन
Abrupt junction	अपच्छिन्न संधि
Absence	अनुपस्थिति, गैरहाजिरी
Absent	अनुपस्थित, गैरहाजिर
Absentee report	अनुपस्थिति रिपोर्ट
Absolute angle	परिशुद्ध कोण
Absolute code	निरपेक्ष कोड
Absolute drift	निरपेक्ष अपवहन, निरपेक्ष ड्रिफ्ट

विद्युत शब्दावली से कुछ सहायक शब्द

Absolute elevation	निरपेक्ष ऊंचाई
Absolute humidity	निरपेक्ष आर्द्रता
Absolute jet velocity	निरपेक्ष प्रधार वेग, निरपेक्ष जेट वेग
Absolute magnetic permeability	निरपेक्ष चुंबकशीलता, निरपेक्ष चुबंकीय पारगम्यता
Absolute monopoly	पूर्ण एकाधिकार
Absolute path	निरपेक्ष पथ
Absolute pressure gauge	निरपेक्ष दाब प्रमापी
Absolute pressure	निरपेक्ष दाब
Absolute rugosity co-efficient	निरपेक्ष रुक्षता गुणांक
Absolute stability	निरपेक्ष स्थायित्व
Absolute value	निरपेक्ष मान
Absolute velocity	निरपेक्ष वेग
Absolute volume	निरपेक्ष आयतन
Absolute weight	निरपेक्ष भार
Absolute	1. निरपेक्ष 2. परम 3. पूर्ण 4. चरम 5. परिशुद्ध
Absorb	1. अवशोषण 2. समाविष्ट
Absorber	अवशोषक
Absorber, centrifugal	अपकेंद्री अवशोषक
Absorber, surge	प्रोत्कर्ष अवशोषक
Absorption factor	अवशोषण गुणांक
Absorption resistance	अवशोषण प्रतिरोध
Absorption spectrum	अवशोषण स्पैक्ट्रम
Absorption	1. अवशोषण 2. समावेशन
Absorptive power	अवशोषण क्षमता
Absorptivity equilibrium	अवशोषकता साम्य
Abstract contingent bill	संक्षिप्त आकस्मिक व्यय बिल
Abstract of tender	निविदा सार, टेंडर सार

रचना संगम

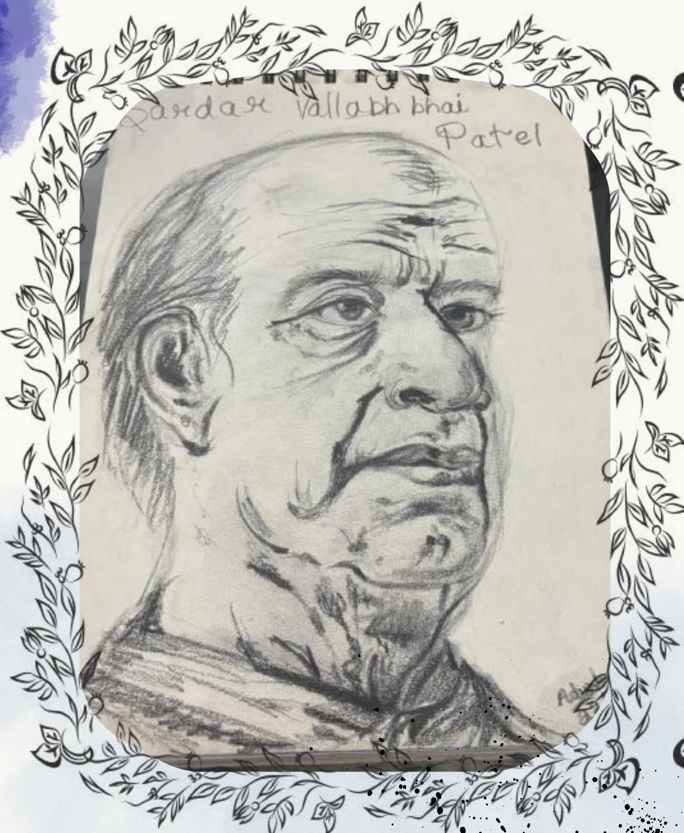

अद्विता राइबगकर
पुत्री - श्री सुमीत राइबगकर
उप महाप्रबन्धक (मानव संसाधन)

एनटीपीसी कोरबा सुर्खियों में

एनटीपीसी के क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक का पदभार संभाला जलोटा ने

नईदुनिया न्यूज, कोरबा: एनटीपीसी नवा रायपुर के पश्चिमी क्षेत्र-टू के क्षेत्रीय कार्यकारी निदेशक का पदभार नीरज जलोटा ने मंगलवार को संभाल लिया है। इसके अलावा जलोटा एनटीपीसी नवा रायपुर में कार्यकारी निदेशक यूएसएससी (यूनिफाइड शेयर्ड सर्विस सेंटर) का पद भी संभाल रहे हैं। पंजाब यूनिवर्सिटी से बीई मैकेनिकल इंजीनियर जलोटा 1988 में एक एग्जीक्यूटिव ट्रेनी के रूप में एनटीपीसी में शामिल हुए थे। आइआइटी दिल्ली से इंडस्ट्रियल इंजीनियरिंग में एम टेक और एमडीआइ गुड़गांव से बिजनेस डेवलपमेंट में पीजी डिप्लोमा किए जलोटा के पास आपरेशन, मैकेनिकल मेंटेनेंस और इरेक्शन, बिजनेस डेवलपमेंट, प्रोजेक्ट कोआर्डिनेशन, कोयला खनन और प्रोजेक्ट कंस्ट्रक्शन के क्षेत्रों में समृद्ध अनुभव है। उन्होंने 37 साल से ज्यादा के करियर में कई अहम पदों पर काम किया और एनटीपीसी बदरपुर, एनटीपीसी- जीई जेवी नोएडा, एनटीपीसी चट्टी बरियातू कोल माइनिंग और एनटीपीसी पकरी बरवाडीह कोल माइनिंग में काम किया। अपने करियर में उन्होंने झारखंड में एनटीपीसी केरंदारी कोल माइनिंग, ओडिशा में एनटीपीसी दुलंगा कोल माइनिंग और झारखंड में एनटीपीसी पकरी बरवाडीह कोल माइनिंग के अलावा मध्य प्रदेश में एनटीपीसी के ज्वाइंट वेंचर झाबुआ के सीईओ का पद संभाला। दो जुलाई, 2025 जलोटा एनटीपीसी नवा रायपुर में कार्यकारी निदेशक-यूएसएससी के रूप में यूनिफाइड शेयर्ड सर्विस सेंटर का नेतृत्व कर रहे हैं और यूनिफाइड कांटैक्ट और परचेज फंक्शंस को बढ़ावा दे रहे हैं।

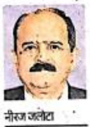

नीरज जलोटा

किशोर चंद्र पात्र बने एनटीपीसी कोरबा के नए परियोजना प्रमुख

अमृत संदेश | बांकीमोंगरा

एनटीपीसी लिमिटेड ने किशोर चंद्र पात्र को एनटीपीसी कोरबा का परियोजना प्रमुख नियुक्त किया है। उन्होंने से विधिवत रूप से कार्यभार ग्रहण कर लिया है। पावर प्लांट संचालन, अनुरक्षण एवं परियोजना प्रबंधन के क्षेत्र में उन्हें साढ़े तीन दशकों से अधिक का व्यापक अनुभव प्राप्त है।

इस नियुक्ति से पूर्व श्री पात्र एनटीपीसी में मुख्य महाप्रबंधक संचालन एवं अनुरक्षण के पद पर कार्यरत थे। इस दौरान उन्होंने संयंत्रों की परिचालन विश्वसनीयता को मजबूत करने, सुरक्षा मानकों को उच्च स्तर तक ले जाने तथा अनुरक्षण उत्कृष्टता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एनटीपीसी में अपने दीर्घ और विशिष्ट करियर के दौरान श्री पात्र ने संगठन की कई प्रमुख परियोजनाओं एवं संयुक्त उपक्रमों में नेतृत्वकारी दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। उन्होंने फरक्का, तालचर कनीहा, एनबीपीपीएल नोएडा, ईआर-द्वितीय मुख्यालय भुवनेश्वर तथा वल्लूर सहित एनटीपीसी की अनेक महत्वपूर्ण इकाइयों में सेवाएँ दी हैं। इसके अलावा, उन्होंने एनबीपीपीएल में परियोजना प्रमुख के रूप में भी कार्य करते हुए संयंत्र प्रदर्शन में सुधार, परिचालन दक्षता में वृद्धि तथा मजबूत सुरक्षा संस्कृति को स्थापित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया। यूसीई बुरला के पूर्व छात्र श्री पात्र ने वर्ष 1989 में एनटीपीसी में कार्यपालक प्रशिक्षु यांत्रिक अभियांत्रिकी के रूप में अपने करियर की शुरुआत की थी। वे अपनी गहन तकनीकी दक्षता, जन-केंद्रित नेतृत्व शैली तथा एनटीपीसी के सुरक्षा, सततता और उत्कृष्टता जैसे मूल मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता के लिए व्यापक रूप से सम्मानित हैं। निरंतर सीखने के समर्थक श्री पात्र ने पावर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट सहित कई प्रतिष्ठित संस्थानों से सुरक्षा नेतृत्व, उन्नत प्रबंधन, बॉयलर डिजाइन एवं अनुरक्षण, वित्तीय प्रबंधन, कॉर्पोरेट गवर्नेंस, सततता एवं तकनीकी कौशल विकास से संबंधित व्यापक प्रशिक्षण प्राप्त किया है। एनटीपीसी कोरबा के परियोजना प्रमुख के रूप में किशोर चंद्र पात्र सुरक्षा, दक्षता, विश्वसनीयता, सततता और सामुदायिक सहभागिता पर विशेष फोकस के साथ स्टेशन के संचालन एवं अनुरक्षण कार्यों का नेतृत्व करेंगे। उनके नेतृत्व में एनटीपीसी कोरबा के देश के प्रमुख विद्युत संयंत्रों में अपनी स्थिति को और सुदृढ़ करने तथा राष्ट्र की विद्युत आपूर्ति में निरंतर और विश्वसनीय योगदान देने की अपेक्षा की जा रही है।

FOLLOW US ON | रायपुर, सोमवार, 26 जनवरी 2026
स्वतंत्र स्वर | 13

एनटीपीसी कोरबा प्रस्तुत करता है ''धरोहर'' – अन्नपूर्णा देवी की विरासत को समर्पित दिव्य भारतीय शास्त्रीय संगीत संध्या

स्वतंत्र स्वर

कोरबा। एनटीपीसी कोरबा ने 24 जनवरी की संध्या को अपने सांस्कृतिक परिदृश्य को दिव्य राग-रस और शाश्वत परंपरा से सराबोर करते हुए ''धरोहर'' नामक भव्य भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं नृत्य संध्या का आयोजन किया, जो महान संगीत मनीषी अन्नपूर्णा देवी की अमर विरासत को समर्पित थी। बसंत पंचमी की पावन भावना में आयोजित यह कार्यक्रम भारत की समृद्ध संगीत और कला परंपरा को सच्ची श्रद्धांजलि था — और ''धरोहर'' अर्थात् अमूल्य विरासत के भाव को पूर्णतः साकार करता था।

यह प्रतिष्ठित कार्यक्रम एनटीपीसी कोरबा टाउनशिप स्थित अंबेडकर भवन में आयोजित हुआ। समारोह का शुभारंभ अतिथियों एवं विशिष्ट गणमान्यों के गरिमामय स्वागत के साथ हुआ। मुख्य अतिथि श्री विभास घटक, उनके साथ श्रीमती सुभा घटक (अध्यक्ष, मैत्री महिला समिति) तथा एनटीपीसी के वरिष्ठ अधिकारियों का पारंपरिक स्वागत किया गया, जिससे पूरे वातावरण में गरिमा, श्रद्धा और सांस्कृतिक गौरव का भाव व्याप्त हो गया। बसंत पंचमी — विद्या, संगीत और सृजन का पर्व — की भावना से ओतप्रोत यह संध्या एक आध्यात्मिक और कलात्मक अर्पण के रूप में सजी। कार्यक्रम में देश के पाँच प्रतिष्ठित कलाकारों की प्रस्तुति रही, जो भारतीय शास्त्रीय परंपराओं के सच्चे संवाहक हैं इनमें पं. देबप्रसाद चक्रवर्ती सितार, पं. सुदीप चट्टोपाध्याय बांसुरी, रूपक मित्र तबला, किशन कुमार देवांगन, हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायन, कल्पना साहू कथक (शास्त्रीय नृत्य) आदि।

कार्यक्रम की शुरुआत एकल प्रस्तुतियों से हुई, जिनमें दर्शकों ने भारतीय शास्त्रीय कलाओं की गहराई और विविधता का अनुभव किया। सितार की ध्यानमग्न गूंज, बांसुरी की मधुर लहरियाँ, तबले की सटीक लयकारी, शास्त्रीय गायन की भावपूर्ण अभिव्यक्ति और कथक की सौम्य मुद्राएँ — प्रत्येक प्रस्तुति अन्नपूर्णा देवी की प्रेरणा को नमन थी। कार्यक्रम का उत्कर्ष एक भव्य जुगलबंदी के साथ हुआ, जहाँ सभी कलाकारों ने एक साथ सुर, लय और भाव का अद्भुत संगम प्रस्तुत किया। इस सामूहिक प्रस्तुति ने वातावरण को मंत्रमुग्ध कर दिया और श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। समापन अवसर पर सभी कलाकारों को पारंपरिक ढोकरा शिल्प स्मृतिचिह्न और कोसा शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया — जो सम्मान और सांस्कृतिक जड़ों का प्रतीक था।

कलाकार परिचय

किशन कुमार देवांगन, राजिम (छत्तीसगढ़) के युवा एवं प्रतिभाशाली हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायक हैं। उन्होंने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से पं. सतीश लक्ष्मण राव इंदुरकर (ग्वालियर घराना) के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्तमान में वे पं. कैवल्य कुमार गुरव के शिष्य तथा डॉ. गंगूबाई हंगल गुरुकुल, कर्नाटक के छात्रवृत्ति प्राप्त विद्यार्थी हैं। उनकी गायकी किराना घराने की आत्मा से परिपूर्ण है।

कल्पना साहू, दूरदर्शन केंद्र, रायपुर की बी-ग्रेड कलाकार हैं और डॉ. गुंजन तिवारी से कथक में प्रशिक्षित हैं। उन्होंने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ से स्नातक व स्नातकोत्तर की शिक्षा प्राप्त की है तथा खजुराहो महोत्सव सहित अनेक प्रतिष्ठित मंचों पर प्रस्तुति दी है।

पं. देबप्रसाद चक्रवर्ती, देश के अग्रणी सितार वादकों में से एक हैं। उन्हें सेनिया-मैहर घराने में पं. अजय सिन्हा राय तथा बिष्णुपुर घराने के पं. गोकुल नाग से मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। उनकी शैली ध्रुपद-प्रधान और गूढ़ संगीतात्मकता से परिपूर्ण है।

पं. सुदीप चट्टोपाध्याय, पन्नालाल घोष परंपरा के प्रमुख बांसुरी वादक हैं। वे आकाशवाणी, कोलकाता के टॉप-ग्रेड कलाकार हैं और 1992 से पश्चिम बंगाल के एकमात्र आईसीसीआर मान्यता प्राप्त बांसुरी वादक हैं।

रूपक मित्र, एक प्रतिष्ठित तबला वादक हैं, जिन्हें प्रारंभिक प्रशिक्षण फर्रुखाबाद घराने के सजल कर्मकार तथा बाद में बनारस घराने के पं. समर साहा से प्राप्त हुआ। वे रवींद्र भारती विश्वविद्यालय से एम.फिल. तथा आकाशवाणी, कोलकाता के बी-ग्रेड कलाकार हैं।

''धरोहर'' के माध्यम से एनटीपीसी कोरबा ने एक बार फिर भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को सुदृढ़ किया। यह केवल एक संगीत संध्या नहीं, बल्कि परंपरा, भक्ति और कलात्मक उत्कृष्टता का उज्ज्वल उत्सव था — जिसकी स्मृति सदा दर्शकों के हृदय में जीवित रहेगी।

विद्यार्थियों ने जाना स्वच्छता, व्यक्तिगत साफ-सफाई एवं पर्यावरण संरक्षण का महत्व

कोरबा। सीएसआर एनटीपीसी एवं स्वच्छता पुकारे फ़ाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में नैगम सामाजिक दायित्व (सीएसआर) अंतर्गत ग्राम स्थित विद्यालयों में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम कराया जा रहा है। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को स्वच्छता के महत्व, व्यक्तिगत साफ-सफाई तथा पर्यावरण संरक्षण के बारे में जानकारी दी जा रही है। विद्यालय में स्वच्छता एवं पर्यावरण से संबंधित वाल पेंटिंग भी की गई है। कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता भी कराई जा रही है। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले बच्चों को उनकी रचनात्मकता और संदेशात्मक चित्रों के लिए पुरस्कार भी वितरण किए जा रहा हैं। रंग-बिरंगे चित्रों के माध्यम से बच्चे स्वच्छ भारत, स्वच्छ पर्यावरण और स्वस्थ समाज का संदेश देने के लिए विद्यालयों के छात्रों द्वारा रैली निकाली गई।

swatantraswar@gmail.com
सिटी
FOLLOW US ON | रायपुर, सोमवार 5 जनवरी 2026
स्वतंत्र स्वर | 3

एनटीपीसी कोरबा में IRSM WR-II क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारंभ

स्वतंत्र स्वर

कोरबा। IRSM WR-II क्रिकेट टूर्नामेंट 2025-26 का शुभारंभ सन्सटॉवर स्टेडियम, एनटीपीसी कोरबा में अत्यंत उत्साह और सांस्कृतिक गरिमा के साथ किया गया। 4 से 8 जनवरी 2026 तक चलने वाले इस टूर्नामेंट में कोरबा, सीपत, लारा, गाडरवारा, खरगोन एवं रायपुर की टीमें भाग ले रही हैं। उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता विभास घटक, बिजनेस यूनिट हेड, एनटीपीसी कोरबा ने की। इस अवसर पर शकुन बेहरा, महाप्रबंधक (ओ एंड एम) की गरिमामयी उपस्थिति रही। श्रीमती सुभा घटक, अध्यक्ष, मैत्री महिला समिति, विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। अतिथियों का स्वागत पारंपरिक कलश कुंभ एवं स्कूली बच्चों द्वारा किया गया। उन्हें पर्यावरण-अनुकूल पौधे, IRSM बैज एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया गया, जो एनटीपीसी की सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय प्रतिबद्धता को दर्शाता है। सभी प्रतिभागी टीमों को कोसा अंगवस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। समारोह का मुख्य आकर्षण टूर्नामेंट लोगो, शुभंकर नंदी एवं विजेता ट्रॉफी का अनावरण रहा, जिसे कार्यकारी निदेशक, कोरबा द्वारा किया गया। नंदी, छत्तीसगढ़ के राज्य पशु गौर (भारतीय बाइसन) से प्रेरित है, जो शक्ति, सहनशीलता और संरक्षण का प्रतीक है। इस अवसर पर विभास घटक ने कहा कि खेल अनुशासन, टीम भावना और नेतृत्व क्षमता को विकसित करते हैं। इस टूर्नामेंट के माध्यम से हम फिटनेस, निष्पक्ष खेल और आपसी सौहार्द को बढ़ावा देना चाहते हैं। समारोह में सभी टीमों द्वारा मार्च-पास्ट, टीम कप्तानों द्वारा मशाल प्रज्वलन, फेयर प्ले एवं फिटनेस शपथ, तथा गुब्बारे छोड़कर टूर्नामेंट का औपचारिक शुभारंभ किया गया। पहले मैच से पूर्व तीरंदाजी एवं कलारीपयट्टु की शानदार प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया तथा खिलाड़ियों में उत्साह और खेल भावना का संचार किया। बीयूएच कोरबा एवं महाप्रबंधक (ओ एंड एम) द्वारा प्रतीकात्मक प्रथम किक-ऑफ किया गया। उद्घाटन मैच कोरबा एवं सीपत के बीच खेला गया, जिसमें कोरबा टीम ने विजय प्राप्त की इस अवसर पर वरिष्ठ अधिकारी, मैत्री महिला समिति के सदस्य, खेल परिषद, यूनियन एवं एसोसिएशन प्रतिनिधि, कल्याणकारी संस्थाएं, विभागाध्यक्ष एवं एनटीपीसी कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। IRSM WR-II क्रिकेट टूर्नामेंट 2025-26 खेल, सौहार्द और प्रतिस्पर्धात्मक उत्कृष्टता का एक जीवंत उत्सव सिद्ध होगा।

एनटीपीसी कोरबा ने धनरास और जमनीपाली स्कूलों के छात्रों के लिए स्वच्छता एवं पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम किया आयोजित

स्वतंत्र स्वर

कोरबा। एनटीपीसी कोरबा की कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) पहल के तहत आसपास के गांवों के स्कूलों में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में CSR, एनटीपीसी कोरबा ने स्वच्छता पुकारे फाउंडेशन के सहयोग से धनरास और जमनीपाली स्कूल में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया।

यह कार्यक्रम मंगलवार को इसका एनटीपीसी कोरबा और स्वच्छता पुकारे फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य छात्रों को स्वच्छता, व्यक्तिगत साफ-सफाई और पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करना था।

इस जागरूकता को मजबूत करने के लिए विद्यालयों में स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी वाल पेंटिंग भी की गई।

कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों के बीच चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। बच्चों ने अपनी रचनात्मकता और संदेशात्मक चित्रों के माध्यम से स्वच्छ भारत, स्वच्छ पर्यावरण और स्वस्थ समाज जैसे विषयों पर सुंदर चित्र बनाए। प्रतियोगिता में विजेताओं को उनके रचनात्मक और अर्थपूर्ण चित्रों के लिए पुरस्कृत किया गया।

इसके अलावा, बच्चों ने एक रैली भी निकाली, जिसमें उन्होंने रंग-बिरंगे पोस्टर लेकर स्वच्छता और स्वस्थ पर्यावरण के महत्व पर समुदाय को जागरूक किया।

विद्यालय प्रबंधन और शिक्षकों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम छात्रों को जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करते हैं और एक स्वच्छ तथा स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान देते हैं।

कोरबा किरण
अपने लोग, अपनी रचना

प्रिय पाठकों,

हिन्दी साहित्य भाव, विचार और संस्कृति का अनुपम भंडार है। प्रस्तुत है एक विशेष साहित्यिक प्रश्नावली—

'साहित्य खोज'

खोजे और जाने ?

'कोरबा किरण' के गत छमाही (अप्रैल से सितंबर) अंक की 'साहित्य खोज' प्रतियोगिता के विजेता -

श्री मनीष अग्रवाल
उप महाप्रबन्धक (एमजीआर)

1 : काव्य–लोक

1. **“जो बीत गई सो बात गई।”**
— हरिवंश राय बच्चन की इस पंक्ति में केवल अतीत को भूलने की बात है या जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने का संदेश भी छिपा है?

2. **“यह दीप अकेला स्नेह भरा,**
है गर्व भरा मदमाता-सा।”
— उक्त पंक्तियाँ अज्ञेय की किस कविता से ली गई है प्रकाशन वर्ष भी बताइए ।

3. **“मुझे तोड़ लेना वनमाली,**
उस पथ पर देना तुम फेंक।”
— ‘पुष्प की अभिलाषा’ में कवि का देशप्रेम त्याग में अधिक दिखाई देता है या बलिदान में व कविता के लेखक कौन है?

4. **“अरी ओ करुणा प्रभामय,**
दुख की छाया मत छूना।”
— महादेवी वर्मा की यह कौनसी कविता है तथा इसमे व्यक्त करुणा और पीड़ा का संबंध किस प्रकार उभरकर आता है ?

5. **“क्षमा शोभती उस भुजंग को,**
जिसके पास गरल हो।”
— दिनकर की ये पंक्तियाँ उनकी किस प्रसिद्ध कविता से ली गई है व उक्त पंक्तियाँ में शक्ति और क्षमा के संबंध को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?

2 : उपन्यास–लोक

1. “गोदान” में होरी जीवनभर ‘गाय’ पाने का सपना क्यों देखता रहा, जबकि वह जानता था कि यह सपना उसे बर्बादी की ओर ले जा रहा है?
2. “आधे-अधूरे” में परिवार टूट रहा था या हर व्यक्ति भीतर से अधूरा था साथ प्रकाशन वर्ष भी बताएं?
3. श्री लाल शुक्ल के उस हिन्दी उपन्यास का नाम बताए जिसमें शहर स्वयं एक पात्र की तरह व्यवहार करता है?
4. यामा” की कविताओं में महादेवी वर्मा जिस ‘पीड़ा’ की बात करती हैं, वह व्यक्तिगत है या समस्त मानवता की तथा इसके लिए इन्हे कब कौनसा प्रसिद्ध पुरस्कार प्राप्त हुआ?
5. “परिंदे” कहानी में पात्र एक-दूसरे से दूर थे या स्वयं से व इसके लेखक का नाम व उनका जन्म वर्ष भी बताएं?
6. “मधुशाला” केवल मदिरा की बात करती है या जीवन-दर्शन की । इसके वर्तमान तक कितने संस्करण आ चुके है?

भाग लेने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें

नोट : उक्त प्रश्नों के उत्तर दिए गए क्यूआर कोड के माध्यम से राजभाषा अनुभाग, एनटीपीसी कोरबा को प्रेषित करने का कष्ट करें। प्रश्नों के उत्तर पत्रिका प्रकाशन के पश्चात ई-मेल द्वारा प्राप्त होने की तिथि से दस दिनों तक ही स्वीकार किए जाएंगे। प्राप्त प्रविष्टियों में से तीन सही प्रविष्टियों को प्राथमिकता के आधार पर उचित प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किया जाएगा तथा विजेताओं के नाम पत्रिका के आगामी अंक में प्रकाशित किए जाएंगे। यह प्रतियोगिता केवल एनटीपीसी कोरबा परियोजना के कर्मचारियों हेतु है। निर्णायक मण्डल का निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा।

एनटीपीसी कोरबा में अंतर क्षेत्रीय खेल प्रतियोगिता - क्रिकेट का आयोजन

एनटीपीसी, कोरबा में मैत्री महिला समिति द्वारा आनंद मेला का आयोजन।

हिंदी में है प्रेम की शक्ति, हिंदी में विश्वास,
इसके माध्यम से जुड़ता हर जन का एहसास।
यह भाषा दिल की धड़कन, यह संस्कृति की जान,
हिंदी से ही महके अपना प्यारा हिंदुस्तान।

एनटीपीसी
NTPC

कोरबा
KORBA

एनटीपीसी लिमिटेड, कोरबा

(भारत सरकार का उद्यम)
कोरबा सुपर थर्मल पावर स्टेशन
पो. विकास भवन, जमनीपाली, कोरबा, छत्तीसगढ़ – 495450